मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

वर्ष-१३, अंक-१२ मार्च २०२४ मुम्बई सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४० मूल्य १००.०० रूपए

एलिफेण्ट जल प्रपात

उमियाम झील

वार्डस झील

शिलांग
मेघालय

डॉवकी नदी

नर्तियांग दुर्गा मंदिर

महादेवखोला मंदिर

एयरपोर्ट

पूर्वी वायु कमान, शिलांग

मावलीलॉन्ग

30 मार्च

'राजस्थान स्थापना दिवस'

BOLLYWOOD PARK FILMCITY MUMBAI

के उपलक्ष पर

30-31 मार्च 2024 को मुंबई की 'फिल्म सिटी' में भव्यातिभव्य 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम का आयोजन
राजस्थानी नृत्य, संस्कृति, खान-पान, परिधान के साथ 7 वें वर्ष में प्रवेश के साथ
'श्रीमती व कुमारी राजस्थानी प्रतियोगिता' का आयोजन
पहले आयें पहले पायें

आयोजक

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई	शोभा सादानी, कोलकाता	डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा	निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9322307908	मो. 8910628944	मो. 9414183919	मो. 9830224300

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

जरूर देखें : http://www.mainbharathun.co.in

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

मैं भारत हूँ
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

पधारो म्हारे देश

मेरा राजस्थान

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

राजस्थान का इतिहास
पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

दिसंबर 2023

भारत का एक राज्य राजस्थान का एक जिला

1 प्रति ₹ 100/- **भीनमाल** 1 प्रति ₹ 100/-

के इतिहास की प्रति मंगवाने के लिए संपर्क करें:- 022-28509999

सम्पादक

बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक	कार्यकारी सम्पादक
संतोष जैन 'विमल'	अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट

विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १२००/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

पधारो सा! मुंबई माय आपणों राजस्थान मेला माय पधारो सा!

यह पत्रक राजस्थानी संस्कृति से भरा है कृपया दूसरे राजस्थानी तक जरूर पहुंचायें

संस्कृति-समाज-राष्ट्र हमारे जीवन की धरोहर है इनकी साज-संभाल जरूरी है

७ वाँ वर्ष आपणों राजस्थान

धोंरा से ध्रुव की ओर...

BOLLYWOOD PARK FILMCITY MUMBAI

30 मार्च 'राजस्थान स्थापना दिवस' पर
30-31 मार्च 2024 दो दिवसीय
भव्यातिभव्य राजस्थान मेला का आयोजन

राजस्थानी संस्कृति, नृत्य, खान-पान, परिधान, लाख की चूड़ी, मेहंदी, कठपुतली आदि-आदि सभी कुछ

मुंबई की फिल्म सिटी क माय फिल्म की शूटिंग स्थल देखो, साथ ही शुटिंग होत हुआ भी देखो...

चूक हुयी तो बहुत कुछ खोया

'आपणों राजस्थान' मेला नहीं देख्या तो क्या देख्या

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत अंतर्राष्ट्रीय संस्थान

राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई	शोभा सादानी, कोलकाता	डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा	निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9322307908	मो. 8910628944	मो. 9414183919	मो. 9830224300
राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री	**अंतर्राष्ट्रीय संयोजक**	**अंतर्राष्ट्रीय संयोजक**	**कार्यक्रम संयोजक**
रवि जैन, मुंबई	अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका	किशोर जैन, लंदन, यूके	अनुपमा शर्मा (दाधीच), मुंबई
मो. 8108843571	मो. 01(919)610-7106	मो. 044(770)3827595	मो. 97022 05252

कार्यक्रम सहसंयोजक	यातायात संयोजक	राजस्थानी व्यंजन संयोजक
सन्नी मंडावरा, मुंबई	विमला समदानी, मुंबई	दिलीप झंवर, मुंबई
मो. 8080280330	मो. 9324560725	मो. 9820075931

सौजन्य : गेलॉर्ड ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन्स

जिनागम | मेरा राजस्थान | मैं भारत हूँ

कण-कण से गुंजेगा जय-जय राजस्थान, बढायेगें भारत का गौरव और सम्मान

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं

जय महाराष्ट्र! 30-31 मार्च 'मुंबई में राजस्थान' देखें जय भारत!

मैं भारत हूँ पत्रिका का आगामी विशेषांक
अप्रैल २०२४

लोअर आसाम

बंगाईगांव, बरपेटा रोड, नलबाड़ी, टिहू, कोकड़ाझाड़, धुबड़ी

Tariff Card

Monthly Magazine
Main Bharat Hun

Reader Ship
17,000

Readers
Politician /

Release Date
21th day of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19 cm x 24 cm

Print in Colour
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022
ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/-*	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/-*	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/-*	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-*	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-*	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-*	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-*	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-*	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-*	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-*	+ 5% GST

*** Per Insertion**

१४वें वर्ष में प्रवेश

मैं भारत हूँ

वर्ष -१३, अंक १२, मार्च २०२४

वार्षिक मुल्य
रु.१२००/-
१२ अंकों का

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ लाडला

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

● 'मैं भारत हूँ' में प्रकाशित लेखों/ कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्ण सहमत होना सम्भव नहीं है।
● 'मैं भारत हूँ' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र,
भारत - ४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
UPI No:- 9322307908
अन्तरताना:- www.mainbharathun.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ....

'शिलांग' प्राकृतिक छटाओं से भरा पूरा स्वर्ग जैसा सुंदर है

'भारत' का एक राज्य मेघालय की राजधानी 'शिलांग' की बात ही निराली है, हम किसी ने स्वर्ग तो नहीं देखा होगा पर जीते जी स्वर्ग देखना है तो 'शिलांग' की पावन और प्राकृतिक छटाओं से भरा पूरा शहर को जरूर निहारना या देखना चाहिए, कारण यह है कि मैंने भारत के कई राज्यों के शहरों व नगरों का इतिहास व वर्तमान के बारे में लिखा है, जिसको भारत के विभिन्न धर्मालंबियों ने सराहा और कहा भी कि बिजय जी! हम भारतीयों की जानकारी बढ़ाने का श्रेयपूर्ण कार्य आप कर रहे हैं, जिसके लिए आप धन्यवाद के पात्र बनते जा रहे हैं।

प्राकृतिक छटाओं से भरा-पूरा मेघालय की राजधानी 'शिलांग' के बारे में लिखते समय अति गौरवपूर्ण शांति के भावों का एहसास हुआ कि मैं भी 'भारत' का निवासी हूं, जिस 'भारत' का एक हिस्सा 'शिलांग' भी है। मुझे पूरा विश्वास भी है कि मेरे द्वारा लिखा गया 'शिलांग' का इतिहास, जितनी भी मुझे जानकारी मिल पाई उसको प्रकाशन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ, यह मेहनत मेरी तब ही सफल होगी जब विभिन्न भारतीय धर्मावलंबी अपने जीवन काल में एक बार 'शिलांग' की प्राकृतिक छटाओं आनंद जरूर लेंगे, देखेंगे, निहारेंगे व आत्मसात करेंगे।

'भारत' का एक राज्य जिसकी स्थापना ३० मार्च १९४९ को हुई थी। मैं भारत का एक राज्य महाराष्ट्र की राजधानी 'मुंबई' में पिछले ६ सालों से 'राजस्थान स्थापना दिवस' पर विश्व का प्राचीन व ऐतिहासिक राजस्थान की धरोहर का बखान करता चला आ रहा हूं। बता दूं कि मुंबई व आसपास के क्षेत्र में करीब २० लाख राजस्थानी परिवार, राजस्थान के विभिन्न नगरों, शहरों से प्रवासित हैं, उनकी एकजुटता व समन्वयता के लिए इस वर्ष यानी २०२४ को मुंबई की फिल्म सिटी में 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के तत्वावधान में 'आपणों राजस्थान' कार्यक्रम दो दिवसीय ३० व ३१ मार्च को मुंबई की 'फिल्म सिटी' में आयोजन किया जा रहा है। भव्यातीभव्य राजस्थानी कार्यक्रम का उद्घाटन भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति घराने से पद्म भूषण सम्मान से सम्मानित श्रीमती राजश्री बिरला जी के कर कमलों द्वारा किया जा रहा है, जिसमें देश-विदेश से भारतीय अपनी गरिमामयी उपस्थिति दिखा रहे हैं।

'भारत में है राजस्थान ये है आपणों राजस्थान' कार्यक्रम में 'भारत को केवल भारत ही बोलेंगे' की शपथ भी उपस्थित लोगों द्वारा ली जाएगी।

जय भारत! जय जय राजस्थान! के साथ अगले महीने फिर कुछ नया लेकर आपके समक्ष जरूर उपस्थित होऊंगा।

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि-भाषा

आपका अपना
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

SINGHANIA PRINTING

Precision. Passion. Perfection.

Transform your Vision into reality...

print Xpress

COMPLETE PRINTING SOLUTION

The product range from Multi-Colour Offset, Digital, Web, Solvent & Eco Solvent Printing, Flex,Vinyl, Glowshine Board, LED Signages, LED Board, Canvas, Wall Paper, Laser Engraving, UV Coating, Hot & Cold Lamination, Foiling, Router (on WPC, MDF, Granite, Marbel, Ply, etc..) Hoarding Printing, UV Printing (on Glass, Tiles, Marbel, MDF, WPC, Sun Board, Leather, Fabrics etc..) Printed Gift Items, Album Making, Trophies, Books in Monochrome and Multicolour, Coffee Table and Children's Books, School Books, Excersice Book, Dated Products, Posters, CD Covers, Catalog Magazine, Presentation Folder, Brochures, Coupon Books, Calendars, Dairy, Etch & Cut Gift Items and all other Commercial printing & Packaging works like Envelops, Labels, Boxes, such as Agarbatti Box, Medicine Box, Cake Box Etc.

For all your printing jobs please contact the following address :

Guwahati Office:
Singhania Printing Press LLP
Industrial Estate, Bylane No.7, Bamunimaidam, Guwahati - 21
Mobile: +91 94351 10199, +91 73990 10211
E-mail: sppllpoffice@gmail.com

Shillong Office:
Singhania Group of Industries
3rd Floor, Eldorado Building, Above Vishal Mega Mart
Jail Road, Shillong - 793001, Meghalaya (India)
Phone: 0364-2501751, 2502456, Fax: 0364-2222570
Mobile: +91 97740 12302
E-mail: singhaniaho@gmail.com

Guwahati Office:
Print Xpress, Ground Floor, D.S. Mansion, Near State Zoo,
Opp Spanish Garden, Zoo Road, Guwahati - 781005
Mobile: +91 97070 24400, +91 97060 24400
E-mail: printxpressghy@gmail.com

Shillong Office:
Print Xpress
Jail Road, Shillong - 793001, Meghalaya (India)
Phone: 0364-2501751, 2502456, Fax: 0364-2222570
Mobile: +91 97740 12303
E-mail: printxpress04@gmail.com

दो साल में हिन्दी भाषा के विषय वाले स्कूल दस गुना बढ़े

'हिंदी' को जल्द मिलेगा भारत में राष्ट्रभाषा का दर्ज़ा

- बिजय कुमार जैन (हिंदी सेवी) वरिष्ठ पत्रकार व संपादक

अमेरिका में 'हिन्दी' का दबदबा बढ़ रहा है। पिछले दो साल के दौरान अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय भाषा के तौर पर हिन्दी विषय पढ़ाने वाले स्कूलों की संख्या दस गुना बढ़ गई है, अब ९० स्कूलों में 'हिन्दी' के कोर्स चल रहे हैं। हिन्दी के छात्रों की संख्या भी बढ़कर १४ हजार हो गई है। मशहूर सिलिकॉन वैली के सरकारी स्कूलों में हिन्दी वैश्विक भाषा कोर्स शुरू हो गया है। पहली बार 'हिन्दी' को वैश्विक भाषा का दर्जा दिया गया है। अमेरिका में 'हिन्दी' को बढ़ावा देने वाली संस्था आईएएपीएच के अनुसार डलास और ह्यूस्टन समेत डेढ़ दर्जन शहरों के स्कूलों में अगले सत्र से 'हिन्दी' के विषय शुरू हो जायेंगे।

हार्वर्ड और प्रिंस्टन जैसे प्रतिष्ठित १२ विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग:

हार्वर्ड, येल, प्रिंस्टन जैसे १२ प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अलग विभाग संचालित किया जा रहा है। दो साल पहले तक अमेरिका के ६ विश्वविद्यालयों में ही 'हिन्दी' का विभाग संचालित होता था। कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्रो. राकेश रंजन के अनुसार अमेरिका में भारतीयों की दूसरी और तीसरी पीढ़ी में 'हिन्दी' के प्रति लगाव का बड़ा कारण 'हिन्दी' को भाषा के रूप में पढ़ने के बाद मिलने वाले कॅरिअर ऑप्शन हैं। कुछ भारतीय कंपनियां 'हिन्दी' अधिकारियों की नियुक्ति करती है।

'हिन्दी' के शिक्षकों की मांग, फुलब्राइट फैलोशिप पर स्कॉलरशिप दी जा रही है

विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में 'हिन्दी' के शिक्षकों की मांग बढ़ रही है। अमेरिका की पहली 'हिन्दी' पाठ्य पुस्तक 'नमस्ते जी' के लेखक अरुण प्रकाश का कहना है कि स्कूलों में हिन्दी शिक्षकों को प्रति सप्ताह ४० हजार रुपए मिलते हैं, ऐसे में शिक्षकों का रुझान बढ़ रहा है। फुलब्राइट फैलोशिप एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत विश्वविद्यालयों में 'हिन्दी' की पढ़ाई के लिए छात्रों को स्कॉलरशिप दी जा रही है। भारत में 'हिंदी' जानने वालों की संख्या शत-प्रतिशत मानी जा रही है।

(फार्म नं.- 4 नियम 8)
अखबारों के पंजीकरण केंद्रीय नियम 1956 के नियम के तहत
'मैं भारत हूँ' मुंबई के स्वामित्व और अन्य विवरण के बारे में घोषणा।
1) प्रकाशन का स्थानः- गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी- 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059
2) प्रकाशन की अवधिः- मासिक
3) मुद्रक का नामः- विनय ग्राफिक्स
क्या भारतीय नागरिक हैं? - हाँ
4) सम्पादक का नामः- बिजय कुमार जैन
क्या भारतीय नागरिक हैं? हाँ
पताः- बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059
5) इस समाचार पत्र के स्वामी व सहभागी जिनका सहभाग एक प्रतिशत से ज्यादा हो उनका नाम व पता
1) बिजय कुमार जैन
पताः- बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059
2) संतोष जैन
पताः- बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059
मैं बिजय कुमार जैन, गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि. के लिए घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के मुताबिक ऊपर लिखित विवरण सही है।
बिजय कुमार जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर
तारीख 19 मार्च 2024

उल्लास, आनंद, उमंग और भाईचारे के साथ
जीवन व्यतीत करें
होली पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

Bajranglal Agarwal
Mob: 9437657211

हारे का सहारा बाबा श्याम हमारा

SHYAMJEE DISTRIBUTOR
At/Po-M: Rampur dist- Kalahandi Odisha, Bharat- 766102
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

रंगों का त्योहार होली

'होली' वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण भारतीय और नेपाली लोगों का त्यौहार है, यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

'होली' रंगों का तथा हँसी-खुशी का त्योहार है, यह भारत का एक प्रमुख और प्रसिद्ध त्योहार है, जो आज विश्वभर में मनाया जाने लगा है। रंगों का त्यौहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है, यह प्रमुखता से भारत तथा नेपाल में मनाया जाता है। यह त्यौहार कई अन्य देशों जिनमें अल्पसंख्यक हिन्दू लोग रहते हैं, वहाँ भी धूम-धाम के साथ मनाया जाता है, पहले दिन को 'होलिका' जलायी जाती है, जिसे 'होलिका' दहन भी कहते है, दूसरे दिन को प्रमुखतः धुलेंडी व धुरड्डी, धुरखेल या धूलिवंदन भी कहते हैं, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर 'होली' के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। माना जाता है कि 'होली' के दिन लोग पुरानी कटुता को भूला कर गले मिलते हैं और फिर से दोस्त बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है, इसके बाद स्नान कर, विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।

राग-रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। राग अर्थात संगीत और रंग तो इसके प्रमुख अंग हैं ही पर इनको उत्कर्ष तक पहुँचाने वाली प्रकृति भी इस समय रंग-बिरंगे यौवन के साथ अपनी चरम अवस्था पर होती है। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। 'होली' का त्यौहार वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है, इसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है, इस दिन से फाग और धमाल का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। बच्चे-बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ संकोच और रूढ़ियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ़ रंगों की फुहार फूट पड़ती है। गुझिया 'होली' का प्रमुख पकवान है जो कि मावा (खोया) और मैदा से बनती है और मेवाओं से युक्त होती है, इस दिन कांजी के बड़े खाने व खिलाने का भी रिवाज है, नए कपड़े पहन कर 'होली' की शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते है जहाँ उनका स्वागत गुझिया, नमकीन व ठंडाई से किया जाता है। 'होली' के दिन आम्र मंजरी तथा चंदन को मिलाकर खाने का बड़ा महात्म्य है।

होलिका दहन की मुख्य कथा

'होली' से सम्बन्धित मुख्य कथा के अनुसार एक नगर में हिरण्यकश्यप नाम का दानव राजा रहता था, वह सभी को अपनी पूजा करने को कहता था, लेकिन उसका पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का उपासक भक्त था। हिरण्यकश्यप ने भक्त प्रहलाद को बुलाकर भगवान का नाम न जपने को कहा तो प्रहलाद ने स्पष्ट रूप से कहा, पिताजी! परमात्मा ही समर्थ है। प्रत्येक कष्ट से परमात्मा ही बचा सकता है। मानव समर्थ नहीं है, यदि कोई भक्त साधना करके कुछ शक्ति परमात्मा से प्राप्त कर लेता है तो वह सामान्य व्यक्तियों में तो उत्तम हो जाता है, परंतु परमात्मा से उत्तम नहीं हो सकता।

यह बात सुनकर अहंकारी हिरण्यकश्यप क्रोध से लाल पीला हो गया और सिपाहियों से बोला कि इसको ले जाओ, मेरी आँखों के सामने से और जंगल में सर्पों में डाल आओ। सर्प के डसने से यह मर जाएगा, ऐसा ही किया गया, परंतु प्रहलाद मरा नहीं, क्योंकि सर्पों ने प्रह्लाद को डसा नहीं।

प्रह्लाद की कथा के अतिरिक्त यह पर्व राक्षसी ढुंढी, राधा कृष्ण के रास और कामदेव के पुनर्जन्म से भी जुड़ा हुआ है, कुछ लोगों का मानना है कि होली में रंग लगाकर, नाच-गाकर लोग शिव के गणों का वेश धारण करते हैं तथा शिव की बारात का दृश्य बनाते हैं, कुछ लोगों का यह भी मानना है कि भगवान श्रीकृष्ण ने इस दिन पूतना नामक राक्षसी का वध किया था, इसी खुशी में गोपियों और ग्वालों ने रासलीला की और रंग खेला था।

परंपराएँ

'होली' के पर्व की तरह इसकी परंपराएँ भी अत्यंत प्राचीन हैं और इसका स्वरूप और उद्देश्य समय के साथ बदलता रहा है। प्राचीन काल में यह विवाहित महिलाओं द्वारा परिवार की सुख समृद्धि के लिए मनाया जाता था और पूर्ण चंद्र की पूजा करने की परंपरा थी। वैदिक काल में इस पर्व को नवात्रैष्टि यज्ञ कहा जाता था, उस समय खेत के अधपके अन्न को यज्ञ में दान करके प्रसाद लेने का विधान समाज में व्याप्त था। **शेष पृष्ठ ९ पर...**

पृष्ठ ८ से... अन्न को 'होला' कहते हैं, इसी से इसका नाम 'होलिकोत्सव' पड़ा। भारतीय ज्योतिष के अनुसार चैत्र शुदी प्रतिपदा के दिन से नववर्ष का भी आरंभ माना जाता है, इस उत्सव के बाद ही चैत्र महीने का आरंभ होता है, अतः यह पर्व नवसंवत का आरंभ तथा वसंतागमन का प्रतीक भी है, इसी दिन प्रथम पुरुष मनु का जन्म हुआ था, इस कारण इसे मन्वादितिथि कहते हैं। 'होली' का पहला काम झंडा या डंडा गाड़ना होता है, इसे किसी सार्वजनिक स्थल या घर के अहाते में गाड़ा जाता है, इसके पास ही 'होलिका' की अग्नि इकट्ठी की जाती है, 'होली' से काफ़ी दिन पहले से ही यह सब तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं, पर्व का पहला दिन 'होलिका' दहन का दिन कहलाता है, इस दिन चौराहों पर व जहाँ कहीं अग्नि के लिए लकड़ी एकत्र की गई होती है, वहाँ 'होली' जलाई जाती है, इसमें लकड़ियाँ और उपले प्रमुख रूप से

होते हैं, कई स्थलों पर 'होलिका' में भरभोलिए जलाने की भी परंपरा है, 'भरभोलिए' गाय के गोबर से बने ऐसे उपले होते हैं जिनके बीच में छेद होता है, इस छेद में मूँज की रस्सी डाल कर माला बनाई जाती है। एक माला में सात 'भरभोलिए' होते हैं। 'होली' में आग लगाने से पहले इस माला को भाइयों के सिर के ऊपर से सात बार घूमा कर फेंक दिया जाता है, रात को 'होलिका' दहन के समय यह माला 'होलिका' के साथ जला दी जाती है, इसका यह आशय है कि 'होली' के साथ भाइयों पर लगी बुरी नज़र भी जल जाए। लकड़ियों व उपलों से बनी इस 'होली' का दोपहर से ही विधिवत पूजन आरंभ हो जाता है। घरों में बने पकवानों का यहाँ भोग लगाया जाता है, दिन ढलने पर ज्योतिषियों द्वारा निकाले मुहूर्त पर होली का दहन किया जाता है, इस आग में नई फसल की गेहूँ की बालियों और चने के 'होले' को भी भूना जाता है। 'होलिका' का दहन समाज की समस्त बुराइयों के अंत का प्रतीक है, यह बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का सूचक है, गाँवों में लोग देर रात तक 'होली' के गीत गाते हैं तथा नाचते हैं।

'होली' से अगला दिन धूलिवंदन कहलाता है, इस दिन लोग रंगों से खेलते हैं। सुबह होते ही सब अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं। गुलाल और रंगों से सबका स्वागत किया जाता है, लोग अपनी ईर्ष्या-द्वेष की भावना भुलाकर प्रेमपूर्वक गले मिलते हैं तथा एक-दूसरे को रंग लगाते हैं, इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। सारा समाज 'होली' के रंग में रंगकर एक-सा बन जाता है। रंग खेलने के बाद दोपहर तक लोग नहाते हैं और शाम को नए वस्त्र पहनकर सबसे मिलने जाते हैं। प्रीति भोज तथा गाने-बजाने के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

'होली' के दिन घरों में खीर, पूरी और पूड़े आदि विभिन्न व्यंजन (खाद्य पदार्थ) पकाए जाते हैं, इस अवसर पर अनेक मिठाइयाँ बनाई जाती हैं जिनमें गुझियों का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बेसन के सेव और दहीबड़े भी सामान्य रूप से उत्तर प्रदेश में रहने वाले हर परिवार में बनाए व खिलाए जाते हैं। कांजी, भांग और ठंडाई इस पर्व के विशेष पेय होते हैं, पर ये कुछ ही लोगों को भाते हैं, इस अवसर पर उत्तरी भारत के प्रायः सभी राज्यों के सरकारी कार्यालयों में अवकाश रहता है, पर दक्षिण भारत में उतना लोकप्रिय न होने की वज़ह से इस दिन सरकारी संस्थानों में अवकाश नहीं रहता।

विशिष्ट उत्सव

भारत में 'होली' का उत्सव अलग-अलग प्रदेशों में भिन्नता के साथ मनाया जाता है। ब्रज की 'होली' आज भी सारे देश के आकर्षण का बिंदु होती है। बरसाने की लठमार 'होली' काफ़ी प्रसिद्ध है। इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएँ उन्हें लाठियों तथा कपड़े के बनाए गए कोड़ों से मारती हैं, इसी प्रकार मथुरा और वृंदावन में भी १५ दिनों तक 'होली' का पर्व मनाया जाता है। कुमाऊँ की गीत बैठकी में शास्त्रीय संगीत की गोष्ठियाँ होती हैं, यह सब 'होली' के कई दिनों पहले शुरू हो जाता है। हरियाणा की धुलंडी में भाभी द्वारा देवर को सताए जाने की प्रथा है। बंगाल की दोल जात्रा चैतन्य महाप्रभु के जन्मदिन के रूप में मनाई जाती है। जुलूस निकलते हैं और गाना बजाना भी साथ रहता है, इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र की रंग पंचमी में सूखा गुलाल खेलने, गोवा के शिमगो में जुलूस निकालने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा पंजाब के होला मोहल्ला में सिक्खों द्वारा शक्ति प्रदर्शन की परंपरा है। तमिलनाडु की कमन पोडिगई मुख्य रूप से कामदेव की कथा पर आधारित वसंतोत्सव है जबकि मणिपुर के **शेष पृष्ठ १० पर...**

'शिलांग' के इतिहास प्रकाशन पर
'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

Bimal Bajaj
Mob: 94361 11891
KEDARMULL BIMALKUMAR
ASSOCIATED WITH

- Trustee - Kanchi Kama Koti Shankara Health Education & Charitable Trust
- Ex Elected Member - Cantonment Board, Shillong
- Chairman - Construction Committee, Kanchi Kama Koti Vidya Vharti Vidyalaya
- President - Purvottar Hindi Academy
- Ex Vice President - Shri Marwari Panchayat, Shillong
- Ex President - Shree Rajasthan Vishram Bhavan, Shillong
- Vice President - Sanskar Bharti
- Patron - Rastriya Shrot Kalyan Mahasangh
- Exective Member - Balika Hindi Vidyalaya Secondary School

Luckier Road, Shillong, Meghalaya, Bharat - 793 002
Ph: 0364-2548303

पृष्ठ ९ से... याओसांग में योंगसांग उस नन्हीं झोंपड़ी का नाम है जो पूर्णिमा के दिन प्रत्येक नगर-ग्राम में नदी अथवा सरोवर के तट पर बनाई जाती है। दक्षिण गुजरात के आदिवासियों के लिए 'होली' सबसे बड़ा पर्व है, छत्तीसगढ़

की 'होरी' में लोक गीतों की अद्भुत परंपरा है और मध्यप्रदेश के मालवा अंचल के आदिवासी इलाकों में बेहद धूमधाम से मनाया जाता है 'भगोरिया', जो 'होली' का ही एक रूप है। बिहार का फगुआ जम कर मौज मस्ती करने का पर्व है और नेपाल की 'होली' में इस पर धार्मिक व सांस्कृतिक रंग दिखाई देता है, इसी प्रकार विभिन्न देशों में बसे प्रवासियों तथा धार्मिक संस्थाओं जैसे इस्कॉन या वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में अलग-अलग प्रकार से 'होली' के श्रृंगार व उत्सव मनाने की परंपरा है जिसमें अनेक समानताएँ और भिन्नताएँ हैं।

होली मनाने का तरीका

'होली' की पूर्व संध्या पर यानि पूजा वाले दिन शाम को बड़ी मात्रा में 'होलिका' दहन किया जाता है और लोग अग्नि की पूजा करते हैं। 'होली' की परिक्रमा शुभ मानी जाती है, किसी सार्वजनिक स्थल या घर के अहाते में उपले व लकड़ी से 'होली' तैयार की जाती है। 'होली' से काफ़ी दिन पहले से ही इसकी तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। अग्नि के लिए एकत्र सामग्री में लकड़ियाँ और उपले प्रमुख रूप से होते हैं। गाय के गोबर से बने ऐसे उपले जिनके बीच में छेद होता है जिनको गुलरी, भरभोलिए या झाल आदि कई नामों से अलग-अलग क्षेत्र में जाना जाता है, इस छेद में मूँज की रस्सी डाल कर माला बनाई जाती है।

लकड़ियों व उपलों से बनी इस 'होली' का सुबह से ही विधिवत पूजन आरंभ हो जाता है। 'होली' के दिन घरों में खीर, पूरी और पकवान बनाए जाते हैं, घरों में बने पकवानों से भोग लगाया जाता है। दिन ढलने पर मुहूर्त के अनुसार 'होली' का दहन किया जाता है, इसी में से आग ले जाकर घरों के आंगन में रखी निजी पारिवारिक 'होली' में आग लगाई जाती है, इस आग में गेहूँ, जौ की बालियों और चने के 'होले' को भी भूना जाता है, दूसरे दिन सुबह से ही लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि लगाते हैं, ढोल बजा कर 'होली' के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है, सुबह होते ही लोग रंगों से खेलते अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं। गुलाल और रंगों से ही सबका स्वागत किया जाता है, इस

दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। प्रीति भोज तथा गाने-बजाने के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

'होली' के अवसर पर सबसे अधिक खुश बच्चे होते हैं, वह रंग-बिरंगी पिचकारी को अपने सीने से लगाए, सब पर रंग डालते भागते दौड़ते मजे लेते हैं, पूरे मोहल्ले में भागते फिरते इनकी आवाज सुन सकते हैं 'होली है..!' एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है, इसके बाद स्नान कर विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।

आधुनिक काल में होली रंगों का त्योहार है, हँसी-खुशी का त्योहार है, लेकिन होली के भी अनेक रूप देखने को मिलते हैं। प्राकृतिक रंगों के स्थान पर रासायनिक रंगों का प्रचलन, भांग-ठंडाई की जगह नशेबाजी और लोक संगीत की जगह फ़िल्मी विभत्स गानों का प्रचलन इसके कुछ आधुनिक रूप हैं, लेकिन इससे 'होली' पर गाए-बजाए जाने वाले ढोल, मंजीरों, फाग, धमार, चैती और ठुमरी की शान में कमी नहीं आती, अनेक लोग ऐसे हैं जो पारंपरिक संगीत की समझ रखते हैं और पर्यावरण के प्रति सचेत हैं, इस प्रकार के लोग और संस्थाएँ चंदन, गुलाब जल, टेसू के फूलों से बना हुआ रंग तथा प्राकृतिक रंगों से 'होली' खेलने की परंपरा को बनाए हुए हैं, साथ ही इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दे रहे हैं। रासायनिक रंगों के कुप्रभावों की जानकारी होने के बाद बहुत से लोग स्वयं ही प्राकृतिक रंगों की ओर लौट रहे हैं। 'होली' की लोकप्रियता का विकसित होता हुआ अंतर्राष्ट्रीय रूप भी आकार लेने लगा है।

रंगारंग होली के त्यौहार पर हार्दिक शुभकामनाएं

Ashok Seth
Mob: 9310575742 / 9839416251 / 9015177414

GPI | Galaxy Poly Industries

Mfr of: Stretch Flims, Cling Flim, Machine Grade Flim, Etc.

I-204, Sector-1, Bawana Indl. Area, Delhi, Bharat - 110039
Email: galaxypolyindustries@gmail.com

'शिलांग' के इतिहास प्रकाशन पर
'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

Satyanarayan Beriwal
Mob: 94363 07214
RAINBOW ELECTRICALS
Howell Road Laban, Shillong, Meghalaya, Bharat - 793004
Email: rainbowelectricals_shillong@yahoo.com

'शिलांग' के इतिहास प्रकाशन पर
'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

Ramesh Bawri
Chairman
Mob: 94361 16456
RAMESH BAWRI GROUP
Harmony-in-Growth
Bawri Mansions, Dhankheti, Shillong,
Meghalaya, Bharat - 793001
Email: rbawri@gmail.com

युग शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी
के चरणों में भावपूर्ण विनयांजलि

Achalchand V. Jain
Mob: 9822055917
N.S. Jain And Co. Pvt. Ltd.
150 Bhawani Peth, Pune, Bharat- 411042

भारत का एक राज्य मेघालय की राजधानी है शिलांग

'शिलांग' पूर्वोत्तर भारत के राज्य मेघालय में स्थित एक पर्वतीय स्थल एवं मेघालय की राजधानी है, यह ईस्ट खासी हिल्स जिले का मुख्यालय भी है। जनसंख्या की दृष्टि से २०११ की भारतीय जनगणना के अनुसार १,४३,२२९ के आंकड़े के साथ 'शिलांग' का भारत में ३३०वां स्थान था। शहर के बारे में कहा जाता है कि नगर को घेरे हुए घूमती पहाड़ियां इसे ब्रिटिश लोगों को स्कॉटलैण्ड की याद दिलाती थी, इसीलिये वे इसे 'स्कॉटलैण्ड ऑफ़ द ईस्ट' कहा करते थे।

'शिलांग' आकार में बढ़ता चला गया, क्योंकि १८६४ में इसे खासी एवं जयन्तिया हिल्स क्षेत्र का सिविल स्टेशन बनाया गया था। १८७४ में असम के मुख्य आयुक्त प्रान्त (चीफ़ कमिश्नर्स प्रोविन्स) गठन किये जाने पर इसे नये प्रशासन का मुख्यालय घोषित किया गया, ऐसा इस स्थान की ब्रह्मपुत्र एवं सूरमा नदियों के बीच उपयुक्त स्थिति को देखते हुए तथा भारत के गर्म उष्णकटिबन्धीय जलवायु से अपेक्षाकृत 'शिलांग' के ठण्डे मौसम को देखते हुए किया गया था। 'शिलांग' २१ जनवरी १९७२ को नवीन मेघालय राज्य के गठन होने तक अविभाजित असम की राजधानी बना रहा और इसके बाद असम की राजधानी को गुवाहाटी के दिसपुर स्थानांतरित कर दिया गया।

स्थापना

शिलांग १८६४ ई. तक एक छोटा-सा गांव था, जो कि खासी और जेन्तिया पहाड़ियों से घिरा हुआ है, यह बंगाल और असम की राजधानी हुआ करती थी, आगे चलकर शिलांग को जनवरी १९७२ में नवनिर्मित राज्य 'मेघालय' की राजधानी बनाया गया।

इतिहास

ब्रिटिश राज्य के समय 'शिलांग' संयुक्त असम की राजधानी थी, उसके बाद भी 'मेघालय' के पृथक राज्य बन जाने तक बना रहा। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के ब्रिटिश सिविल सर्वेण्ट डैविड स्कॉट्ट नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर के गवर्नर जनरल के एजेण्ट थे। प्रथम एंग्लो-बर्मीज़ युद्ध के समय ब्रिटिश अधिकारियों को सिल्हट को असम से जोड़ने हेतु मार्ग की आवश्यकता हुई। यह मार्ग खासी एवं जयन्तिया पर्वतमाला से निकलना था। डैविड स्कॉट्ट ने अपने अधीनस्थ अधिकारियों द्वारा खासी सियामों अर्थात उनके प्रधान अध्यक्षों तथा अन्य लोगों से होने वाली समस्याओं का सामना किया। खासी पर्वत के सुहावने मौसम से प्रभावित हुए स्कॉट्ट ने सोहरा (चेरापुन्जी) के सियाम से १८२९ में ब्रिटिश लोगों के लिये एक आरोग्य निवास के प्रबन्ध हेतु समझौता किया, इस प्रकार खासी-जयन्तिया पर्वत क्षेत्र में ब्रिटिश आगमन आरम्भ हुआ, इसके परिणामस्वरूप खासी लोगों द्वारा भरपूर विरोध आरम्भ हुआ जो १८२९ के आरम्भ से जनवरी १८३३ तक चला। खासी संघ प्रमुखों का अंग्रेजों की सैन्य शक्ति के सामने कोई मुकाबला नहीं था, अन्ततः डेविड स्कॉट ने खासी प्रतिरोध के प्रमुख नेता टिरोट सिंग के आत्मसमर्पण के लिए बातचीत की, जिसे कालान्तर में हिरासत में लेकर ढाका ले जाया गया और नज़रबन्द कर दिया गया। खासी प्रतिरोध के बाद इन पहाड़ियों में एक राजनीतिक एजेंट तैनात किया गया था, जिसका मुख्यालय सोहरा जिसे चेरापुंजी भी कहा जाता था, **शेष पृष्ठ १३ पर...**

पृष्ठ १२ से... वहां था, किन्तु सोहरा की जलवायु स्थिति और सुविधाओं ने अंग्रेजों को विशेष पसन्द नहीं आयी और इसके बाद वे 'शिलांग' चले गए, जिसे तब येड्डो या 'इवडु' के नाम से जाना जाता था जैसा कि स्थानीय लोग

खासी हिल्स

इसे कहते थे। 'शिलांग' नाम को बाद में अपनाया गया था, क्योंकि नए शहर का स्थान 'शिलांग' पीक से नीचे था।

१८७४ में प्रशासन की सीट के रूप में 'शिलांग' के साथ एक अलग मुख्य आयुक्त का गठन किया गया था एवं इसे चीफ़ कमिश्नरशिप बनाया गया। नए प्रशासन में 'सिल्हट' शामिल था, जो अब बांग्लादेश का हिस्सा है। मुख्य आयुक्त में शामिल नागा हिल्स (वर्तमान नागालैंड), लुशाई हिल्स (वर्तमान मिज़ोरम) के साथ-साथ खासी, जयंतिया और गारो हिल्स भी शामिल थे। १९६९ तक मेघालय के स्वायत्त राज्य के गठन के बाद 'शिलांग' समग्र असम की राजधानी थी। जनवरी १९७२ में मेघालय को पूर्ण राज्य बना दिया गया। शिलांग म्युनिसिपल बोर्ड का १८७८ के समय से पुराना इतिहास है, जब १८७६ के बंगाल म्युनिसिपल एक्ट के तहत एक स्टेशन के रूप में मावखर और लाबान के गाँवों सहित 'शिलांग' और उसके उपनगरों को मिलाकर एक घोषणा जारी की गई थी। 'शिलांग' की नगरपालिका के भीतर (एसई मावखार,

नगरपालिका शिलांग

जाइयाव, झालुपाड़ा और मावप्रेम का भाग) और लाबान (लुम्परिंग, मडन लाबान, केंच का ट्रेस और रिलॉन्ग) १५ नवंबर १८७८ के समझौते के तहत माइलिम के हैन माणिक सियाम द्वारा सहमति व्यक्त की गई थी। ब्रिटिश युग के इतिहास में १८७८ से १९०० तक 'शिलांग' का कोई निशान नहीं मिलता है। १२ जून १८९७ को आए महान भूकंप में शिलांग भी प्रभावित हुआ। रिक्टर पैमाने पर इस भूकंप की अनुमानित तीव्रता ८.१ थी, अकेले 'शिलांग' शहर से सत्ताईस लोगों की मृत्यु हो गई थी और शहर का एक बड़ा भाग नष्ट हो गया था।

भूगोल

स्मार्ट सिटी मिशन

'शिलांग' को केंद्र सरकार के 'स्मार्ट सिटीज मिशन' अटल मिशन फॉर रेजुविनेशन एणऔड अर्बन ट्रान्स्फ़ॉर्मेशन (AMRUT) के तहत अनुदान प्राप्त करने के लिए १००वें शहर के रूप में चुना गया। जनवरी २०१६ में, स्मार्ट सिटीज़ मिशन के तहत २० शहरों की घोषणा की गई, इसके बाद मई २०१६

स्मार्ट सिटी मिशन

में १३ शहर, सितंबर २०१६ में २७ शहर, जून २०१७ में ३० शहर और २०२० में जनवरी में ९ शहर इसमें सम्मिलित किये गए। स्मार्ट सिटीज मिशन के तहत अंतिम रूप से चयनित १०० शहरों में कुल शेष पृष्ठ १४ पर...

'शिलांग' के इतिहास प्रकाशन पर
'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

Ashok Bajaj
Mob: 94361 03528
TIRUPATI TRADERS
Bhutia Market, G.S. Road, Shillong, Meghalaya,
Bharat - 793002
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

पृष्ठ १३ से... प्रस्तावित निवेश २,०५,०१८ करोड़ रुपये था। योजना के तहत, प्रत्येक शहर को विभिन्न परियोजनाओं को लागू करने के लिए केंद्र से ५०० करोड़ रुपये का अनुदान मिला।

जलवायु

'शिलांग' का मौसम प्रायः सुखद एवं प्रदूषण मुक्त रहता है। गर्मियों में तापमान २३° तथा सर्दियों में ४° के लगभग रहता है।

कोपेन जलवायु वर्गीकरण के तहत यह शहर उपोष्णकटिबंधीय उच्चभूमि जलवायु है, इसकी ग्रीष्म ऋतु ठंडी और अत्यधिक वर्षा वाली होती है, जबकि इसकी सर्दियाँ ठंडी और शुष्क होती है। 'शिलांग' मानसून की अनियमितता रहती है, मानसून जून में आता है और अगस्त के अंत तक लगभग बारिश होती है, किन्तु इसका आगमन और प्रस्थान अनिश्चित ही रहता है।

'शिलांग' के इतिहास प्रकाशन पर 'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

Naresh Jain (Pandya)
Mob: 9436111461, 7339711461

Shillong Veneer & Saw Mills Pvt. Ltd.

Umiam Industrial Area,
Umiam (Ri-Bhoi) Meghalaya, Bharat- 793103

यातायात

हालांकि सड़क मार्ग द्वारा सुगम है, किन्तु 'शिलांग' में रेल मार्ग अभी तक उपलब्ध नहीं है।

सड़क मार्ग

पूर्वोत्तर भारत के अधिकांश राज्यों से 'शिलांग' सड़क मार्ग द्वारा भली-भांति जुड़ा हुआ है। दो प्रधान राष्ट्रीय राजमार्ग यहां से निकलते हैं:

- ➡ राष्ट्रीय राजमार्ग ४० गुवाहाटी से जुड़ा हुआ है।
- ➡ राष्ट्रीय राजमार्ग ४४ त्रिपुरा एवं मिज़ोरम (रा.रा.४४ए) से जुड़ा हुआ है।

अन्य राज्यों की राज्य परिवहन बसें तथा निजी बस संचालकों की बसें 'शिलांग' दैनिक रूप से आती जाती रहती हैं। यहां से पूर्वोत्तर राज्यों के विभिन्न नगरों जैसे गुवाहाटी, अगरतला, आइज़ोल को टैक्सी सेवा भी सदा उपलब्ध रहती है।

'शिलांग' बाईपास

'शिलांग' बाईपास मार्ग ४७.०६ कि.मी (२९.२ मील) का एक दो लेन का सड़क मार्ग है जो उमियम (रा.रा-४०) से जोराबाद (रा.रा-४४) को जोड़ता है और वहां से अन्य पूर्वोत्तर राज्यों जैसे त्रिपुरा एवं मिज़ोरम जाया जा सकता है। इस परियोजना की कुल लागत लगभग २२० करोड़ में यह दो वर्ष की अवधि (२०११-२०१३) में बनकर तैयार हुआ था।

वायुयात्रा

यहां जाने के लिए हवाई जहाज उत्तम माध्यम है। शिलांग से ४० किलोमीटर की दूरी पर उमरोई में 'शिलांग' हवाई अड्डा है। दिल्ली, कोलकाता और गुवाहाटी से यहां के लिए सीधी उड़ानें है।

'शिलांग' हवाई अड्डा

रेल

मेघालय में रेल लाइनें नहीं है। 'गुवाहाटी' यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन है, जो शिलांग से १०४ किलोमीटर दूर है, यहां से शिलांग पहुंचने में लगभग साढ़े तीन घंटे लगते हैं। 'गुवाहाटी' तक रेल के माध्यम **शेष पृष्ठ १५ पर...**

पृष्ठ १४ से ... से पहुंचा जा सकता है। 'दिल्ली से गुवाहाटी' पहुंचने के लिए राजधानी समेत कई रेलगाड़ियां हैं। 'गुवाहाटी' से असम परिवहन निगम और मेघालय परिवहन निगम की बसें 'शिलांग' से हर आधे घन्टे में चलती हैं। आप चाहें तो टैक्सी भी कर सकते हैं।

धार्मिक विश्लेषण

नगर का मुख्य धर्म ईसाई धर्म है जो यहां की ४६.५% जनता द्वारा अंगीकृत है,जिसके बाद दूसरी जनसंख्या ४२.१% हिन्दुओं की है, ४.५% इस्लाम के अनुयायी हैं, ६.९% लोग सिख, बौद्ध एवं जैन धर्म का पालन करते हैं। 'शिलांग' महानगरीय क्षेत्र में लाईमुख्रा, लावसोतुन, मैडनार्टिंग, मावपत, नोंगक्सेह, नोंगथिम्मई, पिन्थोरउमख्रा, शिलांग छावनी, उमलिंगका तथा उम्प्लिंग आते हैं, जिनकी जनसंख्या ३,५४,७५९ है, इसमें से १२%, १२ वर्ष से छोटे हैं। महानगर (मेट्रो) क्षेत्र की साक्षरता दर ९१% है।

लोग

'शिलांग' के अधिकांश लोग 'खासी' नामक जनजाति के हैं, इस जनजाति के अधिकतर लोग ईसाई धर्म को मानने वाले हैं। ये मूलतः 'खासी' जनजातीय धर्म के पालक थे, किन्तु १९वीं सदी से ईसाई मिसनरियों के आगमन एवं

'खासी' जनजातीय

धर्मान्तरण के कारण अब अधिकतर 'खासी' लोग ईसाई हैं। 'खासी' जनजाति के बारे में विशेष बात यह है कि इस जनजाति मातृ सत्तात्मक परिवार के होते हैं अर्थात महिला को घर का मुखिया माना जाता है, जबकि भारत के अधिकांश परिवारों में पुरुष को प्रमुख माना जाता है, इस जनजाति में परिवार की सबसे छोटी पुत्री को जमीन-जायदाद की अधिकारिणी बनाया जाता है। यहाँ माँ का उपनाम ही बच्चे अपने नाम के आगे लगाते हैं, हालांकि वर्तमान में राजस्थान, बिहार, बंगाल व असम के कई परिवार यहाँ पर जीविका की दृष्टि से आकर बसे हुए हैं।

क्रीड़ा

'शिलांग' पूर्वोत्तर भारत का एकमात्र राजधानी शहर है, जहाँ से आई-लीग में भाग लेने वाले दो फुटबॉल क्लब हैं- रॉयल वाहिंगदोह एफसी और शिलांग लाजोंग एफसी। दोनों यहां के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में खेलते हैं। रॉयल वाहिंगदोह एफसी को आई-लीग के २०१४-१५ के सत्र में दूसरा उपविजेता घोषित किया गया था।

'शिलांग' गोल्फ कोर्स देश के सबसे पुराने गोल्फ कोर्स में से एक है और यह देवदार और रोडोडेंड्रॉन पेड़ों से घिरा हुआ है।

मेघालय की खासी जनजाति के लोगों में 'तीरंदाजी' एक खेल भी है तथा कई शताब्दियों से चला आ रहा रक्षा का एक रूप भी है और साथ ही जुआ (टेअर) का माध्यम भी है, जहाँ आधुनिक रीति-रिवाजों ने यहां की संस्कृति के कई पारंपरिक पहलुओं को बदल दिया है, 'तीरंदाजी' स्थानीय लोगों के लिए एक व्यापक आकर्षण अभी भी बना हुआ है।

जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम

बिनिंगस्टार लिंग्खोई 'शिलांग' से एक राष्ट्रीय मैराथन धावक है और पिछले २०१० राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। ये २:१८ घंटे के समय के साथ भारत में सबसे तेज मैराथन धावक खिलाड़ी हैं।

चिकित्सा महाविद्यालय

● **पूर्वोत्तर इंदिरा गांधी क्षेत्रीय स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संस्थान**

पूर्वोत्तर इंदिरा गांधी क्षेत्रीय स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संस्थान (नार्थ ईस्टर्न इंदिरा गांधी रीजनल इन्स्टीट्यूट ऑफ हेल्थ एंड मेडिकल साइंसेज) (एनईआईजीआरएचएमएस) पूर्वोत्तर भारत के राज्य शेष पृष्ठ १६ पर...

'शिलांग' के इतिहास प्रकाशन पर
'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

Devendra Singhania
Mob: 98634 95770
ECONOMIC MEDICAL HALL
Police Bazar, Shillong, Meghalaya, Bharat - 793001
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

पृष्ठ १५ से... मेघालय की राजधानी शिलांग में स्थित एक चिकित्सा संस्थान है, यह शिलांग शहर के बाहरी इलाके में स्थित है। वर्तमान पूर्ण तृतीयक चिकित्सा सुविधाएं अस्पताल के स्थायी परिसर, मावडियांगडियांग में २००७ से आरम्भ हुई थी। यह १९८७ में बना भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्थान है, इसे भारतीय संसद द्वारा 'सेंटर आफ़ एक्सीलेन्स' अर्थात 'उत्कृष्टता का केन्द्र' घोषित किया

पूर्वोत्तर इंदिरा गांधी क्षेत्रीय स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संस्थान

गया था, इस संस्थान का औपचारिक रूप से उद्घाटन एवं राष्ट्र को समर्पण ५ मार्च २०१० को यूपीए सरकार की तत्कालीन अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा संस्थान के अपने वर्तमान परिसर, मावडियांगडियांग से किया गया था।

- भारतीय प्रबंधन संस्थान
- राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान
- राष्ट्रीय फैशन टेक्नालॉजी संस्थान, शिलांग
- पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान

महाविद्यालय

- लेडी कीन कॉलेज
- रेड लाबान कॉलेज
- सेंट एन्थोनी'ज़ कॉलेज
- सेंट एड्मण्ड्ज़ कॉलेज
- एड लबान कालेज, शिलांग
- लेडी कियाने कालेज, शिलांग
- सेंट एन्थोनी कालेज, शिलांग
- सेंट एड्मंड कालेज, शिलांग
- सेंट मैरी कालेज, शिलांग
- शंकरदेव कालेज, शिलांग
- सेंग खासी कालेज, शिलांग
- शिलांग कालेज
- शिलांग कामर्स कालेज

शिलांग कालेज

- चेरापुंजीड कालेज, शिलांग
- वूमेन्स कालेज, शिलांग

विधि महाविद्यालय

- **शिलांग लॉ कालेज**

'शिलांग' लॉ कॉलेज की स्थापना वर्ष १९६४ में एक संध्या कॉलेज के रूप में की गई थी। यह शहर के तत्कालीन प्रतिष्ठित व्यक्तियों जैसे स्वर्गीय लोकेश्वर शर्मा, एक विद्वान प्रशासक और एक उल्लेखनीय शिक्षाविद् द्वारा किए गए प्रयासों का परिणाम था। स्वर्गीय भोबेश चंद्र बरुआ, असम के तत्कालीन महाधिवक्ता, स्वर्गीय सुरेश चंद्र राजखोवा, तत्कालीन सार्वजनिक निर्देश निदेशक असम, स्वर्गीय महम सिंह, अधिवक्ता और पूर्व मंत्री असम, स्वर्गीय एरोन एले, अधिवक्ता और असम के पूर्व मंत्री, स्वर्गीय धीरेंद्र नाथ दत्ता, अधिवक्ता, स्वर्गीय जे.एन. देब चौधरी, अधिवक्ता स्वर्गीय श्री हसीबुद्दीन अहमद, अधिवक्ता स्वर्गीय नृपेंद्र मोहन पालित, अधिवक्ता और स्वर्गीय प्रबीन कुमार चौधरी, तत्कालीन द फ्रंटियर टाइम्स के संपादक।

शिलांग लॉ कालेज

धनकेटी: 'शिलांग' में शिलांग लॉ कॉलेज का वर्तमान परिसर १४ फरवरी, १९६९ को बीरेंद्र चंद्र दत्ता से खरीदा गया था, वर्ष १९७३ में वर्तमान स्थल पर स्थानांतरित कर दिया गया था। वर्ष २००० में कॉलेज को संध्या कॉलेज में परिवर्तित कर दिया गया था। डे कॉलेज और टीचिंग फैकल्टी की नियुक्ति बार काउंसिल ऑफ इंडिया और विश्वविद्यालय के नियमों/विनियमों के आधार पर की गई है।

केन्द्रीय विश्वविद्यालय

- अंग्रेजी और विदेशी भाषाओं का केन्द्रीय संस्थान
- पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय (नेहू)
- बी.के. बाजोरिया विद्यालय

बी.के. बाजोरिया विद्यालय

निजी विश्वविद्यालय

- सीएमजे विश्वविद्यालय
- मार्टिन लूथर क्रिश्चियन युनिवर्सिटी, मेघालय
- टेक्नो ग्लोबल विश्वविद्यालय
- प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन विश्वविद्यालय (यूएसटीएम)
- विलियम कैरे विश्वविद्यालय

भारत का एक राज्य मेघालय की राजधानी शिलांग में दर्शनीय स्थल

मेघालय राज्य की गुफा है दिलचस्प

मेघालय राज्य के मावसिनराम गांव में प्रसिद्ध मावजिम्बुइन गुफा पूर्वी खासी पहाड़ियों में हरी-भरी हरियाली, खड़ी ढलानों और आश्चर्यजनक झरनों की सुरम्य पृष्ठभूमि में स्थित है, यह गुफा अत्यधिक भूवैज्ञानिक महत्व रखती है

मावजिम्बुइन गुफा

और प्रकृति प्रेमियों, इतिहासकारों और अध्यात्मवादियों के लिए एक वास्तविक साहसिक रोमांच है।

गुफा का मुख्य आकर्षण शिव लिंग के रूप में एक विशाल स्टैलेग्माइट है जो गुफा के द्वार के पास है, यहाँ जो बहुत ही दिलचस्प है वह यह है कि शिव लिंग अपने ठीक ऊपर गाय के थन के आकार के स्टैलेक्टाइट से टपकते पानी से लगातार नहाता रहता है!

स्टैलेक्टाइट एक सपाट शीर्ष वाली गुंबद के आकार की चट्टान पर है जिसे सिम्पर रॉक कहा जाता है। गुफा का द्वार एक विशाल चौड़ा कक्ष है जो लगभग १५ फीट ऊंचा और १५० फीट चौड़ा है। भूवैज्ञानिकों ने निर्धारित किया है कि वर्षों के अपक्षय, खनिज समृद्ध पानी के टपकने और कैल्शियम कार्बोनेट के जमाव ने इन प्रभावशाली स्पेलोथेम्स यानी स्टैलेक्टाइट्स और स्टैलेग्माइट्स की लुभावनी संरचनाओं का निर्माण किया है। ६८५ फीट की ऊंचाई पर स्थित माउजिम्बुइन गुफा का निर्माण कैलकेरियस बलुआ पत्थरों से हुआ है।

यद्यपि शिवलिंग के रूप में विशाल स्टैलेग्माइट और उसके ऊपर स्टैलेक्टाइट की असामान्य जोड़ी ने भूवैज्ञानिकों को भ्रमित कर दिया है, भक्त इस असाधारण प्राकृतिक रचना की ओर आकर्षित होते हैं जो अमरनाथ गुफा में शिव लिंग के समान है। यह गुफा अब श्रावण के महीने के दौरान और कांवर यात्रा के हिस्से के रूप में भगवान शिव की पूजा करने के लिए देश भर से आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए एक पवित्र मंदिर बन गया है।

प्रवेश द्वार के बाईं ओर एक छोटा सा द्वार है जो एक मार्ग की ओर जाता है जो आपको गुफा के दूसरी ओर ले जाएगा, हालाँकि यह मार्ग आम तौर पर दुर्गम है और अंधेरे में डूबा हुआ है, लेकिन इस हिस्से के नीचे बहने वाली एक छोटी सी धारा की आवाज़ स्पष्ट रूप से सुनाई देती है, इस गुफा का एक हिस्सा बनाने वाले कई ऐसे प्रवेश द्वार और मार्ग हैं जिन्हें आप दरार वाले प्रवेश द्वार कहते हैं जो बहुत संकीर्ण है और उनमें प्रवेश करना मुश्किल है।

यह गुफा इतनी उत्कृष्ट प्राकृतिक सुंदरता के बीच स्थित है कि यह आपको अवाक और आश्चर्यचकित कर देती है, जब आप भगवान शिव की पूजा करते हैं और मंत्रमुग्ध कर देने वाले दृश्यों का आनंद लेते हैं तो आपको अपनेपन, शांति और शांति की गहरी अनुभूति होती है।

मातृ मंदिर

मातृ मंदिर 'शिलांग' की पहाड़ियों पर स्थित है, यह मंदिर मूल रूप से देवी काली को समर्पित है और इसे रमना कालीबाड़ी या मातृ मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। किंवदंती है कि यह मंदिर १००० वर्ष पुराना माना जाता है।

मातृ मंदिर

ऐसी भी मान्यता है कि यह ढाका के बाहरी इलाके में स्थित था, इस खूबसूरत और विशाल प्राचीन मंदिर की दीवारों पर शानदार कलात्मक नक्काशी के साथ एक बहुत ही अनोखी वास्तुकला है।

शिलांग: मोनोलिथ पत्थरों से बना नर्तियांग मंदिर

मेघालय की जैतिया पहाड़ियों में स्थित नर्तियांग, जिसे मोनोलिथ के बगीचे के रूप में जाना जाता है, क्योंकि यह स्थान कई बिखरे हुए मोनोलिथ (पत्थर के खंभे) से बना है। नर्तियांग में ५०० साल पुराना दुर्गा मंदिर है, यह मंदिर

नर्तियांग मंदिर

माता सती के ५१ शक्तिपीठों में से एक है। किंवदंतियों के अनुसार सती देवी की बाईं जांघ यहां महसूस हुई थी और इस मंदिर को शक्ति पीठों में से एक माना जाता है।

मंदिर में देवी दुर्गा मां की मूर्ति (मुख्य देवता) और मुख्य मंदिर के पास शिव मंदिर है। स्थानीय रूप से देवी दुर्गा को जैन्तेश्वरी के **शेष पृष्ठ १८ पर...**

शिलांग में है दर्शनीय बौद्ध मंदिर

बौद्ध धर्म ने वर्ष १९१८ में असम की तत्कालीन राजधानी और अब मेघालय की राजधानी 'शिलांग' में अपनी जड़ें जमा ली थीं, हालांकि यह बहुत धीरे-धीरे फैला, वर्तमान में, शहर के चारों ओर इसके तीन पूजा स्थल हैं। शिलांग जो बाहरी दुनिया में 'पूर्व का स्कॉटलैंड' के नाम से बहुत लोकप्रिय है, प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है। शिलांग का सुरम्य परिदृश्य इसकी हरियाली, सिल्वान जंगल, पहाड़ियों की मनमोहक सुंदरता और लोगों के जीवन की विचित्र गति इसे किसी अन्य की तरह एक अनोखी जगह बनाती है। 'शिलांग' अपनी विविधता और धर्मनिरपेक्ष प्रकृति के लिए भी प्रसिद्ध है, जहां कई धार्मिक आस्थाएं सह-अस्तित्व में हैं और ऐसी धर्मनिरपेक्ष प्रकृति को उजागर करने वाला 'बौद्ध मंदिर' है जो राज्य में बनाया गया था और जो इस क्षेत्र का सबसे पुराना बौद्ध मंदिर भी है।

एक पहाड़ी के ऊपर स्थित, पोलो हिल्स-शिलांग के पास फॉरेस्ट कॉलोनी में शिलांग बौद्ध मंदिर, शिलांग में मौजूद बौद्ध मंदिरों में से एक है, इस मंदिर का तोरणद्वार वास्तुकला में विश्व प्रसिद्ध साँची स्तूप के समान है।

उत्तर पूर्व में पहला बौद्ध मंदिर २४ मई १९१८ को स्थापित किया गया था, उस समय के आसपास के क्षेत्र में और विशेष रूप से 'शिलांग' में बुद्ध की शिक्षा की आवश्यकता का विचार स्वर्गीय कृपासरन महास्तविर को जाता है। बौद्ध धर्मांकुर सभा के अध्यक्ष, जिन्होंने अपने तीर्थ यात्रा पर 'शिलांग' का दौरा किया और तदनुसार असम-शिलांग में बौद्ध मंदिर के निर्माण की योजना बनाई और व्यवस्था की, उनकी पहल के तहत और स्थानीय व्यापारियों, कमला कांता और ज्ञानरंजन बरुआ की मदद से, बौद्ध धर्मकुर सभा की 'शिलांग' शाखा की स्थापना १६ मई, १९२३ को की गई थी। यह मंदिर १८६० के अधिनियम के तहत पंजीकृत किया गया था। यहां एक बौद्ध मंदिर के निर्माण के लिए खासी और जैंतिया हिल्स जिले के डिप्टी कमिश्नर ए जे लेन से जमीन का एक टुकड़ा (एक बीघा) भी हासिल किया गया था।

निर्माण कार्य १९२५ में शुरू किया गया, लेकिन १९२६ में महास्तविर की मृत्यु के कारण इसे रोकना पड़ा। १९३६ में भिक्खु जिनरतन महाथेरा, असम-शिलांग की यात्रा के दौरान, मंदिर की अधूरी संरचना पर रुके थे। आम जनता की प्रतिक्रिया और असम-शिलांग के आसपास बुद्ध की आध्यात्मिक ध्यान शिक्षाओं को फैलाने की आवश्यकता को समझते हुए, अगले वर्ष उन्होंने स्वर्गीय महास्तविर द्वारा छोड़े गए काम को पूरा करने का फैसला किया और समिति के सदस्यों को निर्माण पूरा करने के लिए प्रेरित किया। मंदिर का कुछ वर्षों के संघर्ष के बाद ४ मई १९४७ को 'शिलांग बौद्ध मंदिर' का औपचारिक उद्घाटन किया गया।

पृष्ठ १७ से... नाम से जाना जाता है, क्योंकि देवी सती की बायीं जांघ यहीं जैन्तिया पहाड़ियों में गिरी थी। नर्तियांग दुर्गा मंदिर पहाड़ी की ठीक चोटी पर स्थित है, जहां से नीचे बहती म्युंडु नदी को देखा जा सकता है।

मंदिर के तहखाने में एक गर्भ है जहां बलि अनुष्ठान का पालन किया जाता है, जो एक सुरंग बनाकर नदी तक जाता है।

दुर्गा मंदिर में राजाओं की प्राचीन बंदूकें हैं, जो अन्य मंदिरों की तुलना में एक विविध रूप है, क्योंकि कोई अन्य मंदिर इस तरह का नहीं है।

मंदिर भक्ति के लिए प्रसिद्ध है और यहां दैनिक अनुष्ठानों का पालन किया जाता है, लेकिन दुर्गा पूजा के दौरान नर्तियन में मनाया जाने वाला प्रसिद्ध त्योहार दुर्गा मंदिर में भव्यता से मनाया जाता है, इस पूर्व संध्या पर मंदिर में भक्तों की भीड़ उमड़ती है, भक्त बकरों और बत्तखों की बलि देते हैं। पहले इंसानों की बलि दी जाती थी, बाद में ब्रिटिश काउंसिल द्वारा इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया, अब यह प्रथा जारी है लेकिन इंसानों की जगह बकरों और बत्तखों की बलि दी जाती है।

बकरों की बलि इंसान का मुखौटा पहनकर दी जाती है, इसके अलावा भक्त उत्सव के दौरान केले का श्रृंगार करते हैं और देवी के रूप में पूजा करते हैं, उत्सव के अंत में पौधे को पवित्र नदी में विसर्जित (विसर्जित) करते हैं, मंदिर मार्केट सेंटर में मोनोलिथ, दुर्गा मंदिर के पास शामई मंदिर आदि के बारे में बताता है। मंदिर की जलवायु और अन्य दृश्य भी आगंतुकों और भक्तों को आकर्षित करते हैं।

शिलांग में है महादेव खोला धाम

'शिलांग' बस स्टैंड से ५ किमी की दूरी पर महादेव खोला धाम शिलांग, मेघालय में स्थित एक प्राचीन हिंदू मंदिर है। यह मेघालय के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है और 'शिलांग' के प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों में से एक है।

लगभग १५० वर्ष पुराना माना जाने वाला महादेव खोला धाम एक गुफा मंदिर है जो भगवान शिव को समर्पित है। किंवदंती के अनुसार मंदिर उस स्थान पर बनाया गया है जहां लखिया बाबा, एक ऋषि ने रहने और ध्यान करने का निर्णय लिया था। ८वीं गोरखा रेजिमेंट के एक सूबेदार-मेजर ने सपना देखा कि ऋषि हाथ में त्रिशूल और गले में रुद्राक्ष का हार पहने हुए मध्यस्थता कर रहे हैं, अगले ही दिन उस व्यक्ति ने ऋषि की खोज की और उन्हें उस स्थान पर पाया जहां आज मंदिर है। मंदिर के निर्माण के लिए खुदाई के दौरान, सूबेदार-मेजर को एक विशाल शिवलिंग मिला और इस प्रकार यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित हो गया।

वर्तमान मंदिर का निर्माण आजादी के बाद कई लोगों ने कराया था, लेकिन पहले वाला मंदिर तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की अनुमति से बनाया गया था। गुफा में एक छोटा सा द्वार है जो दूसरी गुफा की ओर जाता है। प्रवेश द्वार पर भगवान शिव की एक छोटी मूर्ति है। ऐसा माना जाता है कि यह द्वार सीधे असम के कामरूप में नीलाचल

पहाड़ियों के ऊपर स्थित प्राचीन कामाख्या मंदिर की ओर जाता है। मुख्य मंदिर के अलावा, परिसर में कई छोटे मंदिर हैं, जिनके बारे में माना जाता है कि इनका निर्माण महादेव खोला धाम के भक्तों द्वारा किया गया था।

मंदिर में हर साल महा शिवरात्रि के अवसर पर तीन दिनों के लिए भगवान शिव का भव्य मेला आयोजित किया जाता है। मेले के दौरान, २५,००० से अधिक लोग भगवान के आर्शीवाद के लिए मंदिर आते हैं।

'शिलांग' के इतिहास प्रकाशन पर
'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

Pradip Chokhani
Mob: 70051 68911
SURESH TRADING CO.
Shop No. 341 D, Shillong, Meghalaya, Bharat - 793002
भारत को 'भारत' ही बोला जाए

'शिलांग' के इतिहास प्रकाशन पर
'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

Pradeep Jain Pahadiya
अध्यक्ष शिलांग मारवाड़ी सम्मेलन
Mob: 98630 68229
Biju Cinema Hall, Police Bazar, Shillong,
Meghalaya, Bharat - 793001

झीलों के शहर शिलांग की खूबसूरती

समुद्र तल से १,४९१ मीटर की ऊंचाई पर मौजूद 'शिलांग' मेघालय की राजधानी है और एक फेमस हिल्स स्टेशन भी है, ये देश का एक ऐसा पहला हिल स्टेशन है, जहां चारों तरफ से पहुंच सकते हैं। 'मैं भारत हूँ' पत्रिका के के प्रबुद्ध पाठकों को बता दें कि शिलांग का नाम U-Shyllong देवता के नाम पर रखा गया था।

समुद्र तल से १,४९१ मीटर की ऊंचाई पर मौजूद 'शिलांग' मेघालय की राजधानी है और एक फेमस हिल्स स्टेशन भी है, ये देश का एक ऐसा पहला हिल स्टेशन है, जहां चारों तरफ से पहुंच सकते हैं। 'शिलांग' का नाम U-Shyllong देवता के नाम पर रखा गया था। 'शिलांग' अपनी खूबसूरती की वजह से किसी स्कॉटलेंड से कम नहीं है, अगर 'मैं भारत हूँ' पत्रिका के प्रबुद्ध पाठक 'शिलांग' घूमने का मन बना रहे हैं, तो आपको बताते हैं यहां की कुछ खूबसूरत जगहों के बारे में:-

शिलांग में उमियम झील

उमियम झील, एक मानव निर्मित जलाशय 'शिलांग' के उत्तर में १५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह एक जलाशय है जिसे १९६० के दशक में उमियाम नदी पर बनाया गया था, तब से यह पर्यटकों के बीच पसंदीदा जगह बनकर

उभरी है। विशाल झील का नीला पानी और उसमें दिखती प्रकृति की सुंदरता लैंडस्केप फोटोग्राफरों के लिए एक उचित स्थान है। यहां आप कई तरह के वॉटर स्पोर्ट्स का मजा ले सकते हैं जैसे कयाकिंग, बोटिंग आदि। ये जलाशय घने शंकुधारी जंगलों से घिरा हुआ है और लगभग २२२ वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है।

शिलांग में एलीफेंट फॉल्स

एलीफेंट फॉल्स देखने लायक जगह है और यहां आप परिवार के साथ या दोस्तों के साथ वीकेंड आउटिंग पर जा सकते हैं। झरने का नाम इसके तल पर एक चट्टान से मिला है जो एक हाथी की तरह दिखाई देता है, इन अद्भुत झरनों से तीन अलग-अलग झरने हरे-भरे हरियाली से आच्छादित हैं जो आसपास के क्षेत्र में चार चांद लगा देते हैं, साथ ही चट्टानों से गिरती क्रिस्टल साफ पानी की आवाज पर्यटकों की आत्मा को तृप्त कर देती है। अगर 'मैं भारत हूँ' पत्रिका के प्रबुद्ध पाठक इस प्राकृतिक जगह को देखना चाहते हैं, तो एलीफेंट फॉल्स 'शिलांग' में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है।

शिलांग में शिलांग पीक

समुद्र तल से ६४४९ फीट या १९६५ मीटर की ऊंचाई पर शिलांग पीक 'शिलांग' का सबसे ऊंचा स्थान है, यह पूरे शहर 'हिमालय' के झरनों के साथ-साथ बांग्लादेश के मैदानों का भी एक लुभावनी मनोरम दृश्य है। चोटी को शहर

की रक्षा करने वाले देवता का निवास भी माना जाता है। शिलांग पीक वायु सेना के अड्डे पर स्थित है और यहां भारतीय वायु सेना का एक रडार स्टेशन भी है, सुरक्षा कारणों से फाटकों पर भारी चेकिंग की जाती है और पर्यटकों को अपने कैमरे जमा करने के लिए कहा जाता है। यहां से पूरे शहर का विहंगम नजारा देखा जा सकता है। रात के समय यहां से पूरे शहर की लाईट असंख्य तारों जैसी चमकती है।

शिलांग में डेविड स्कॉट ट्रेल

'मैं भारत हूँ' पत्रिका के प्रबुद्ध पाठक 'शिलांग' घूमने के शौकीन हैं तो १६ किलोमीटर का यह ट्रेकिंग ट्रेल एक ऐसा रोमांच है जिसे आप जीवनभर याद

रखेंगे, यह पुराना ट्रेक 'शिलांग' या उसके आसपास उपलब्ध सबसे लोकप्रिय साहसिक गतिविधियों में से एक है। दिखती पगडंडी हॉर्स-कार्ट ट्रैक का एक हिस्सा है जिसे डेविड स्कॉट नाम के एक ब्रिटिश प्रशासक ने बनाया था, इस सुंदर पगडंडी पर ट्रैकिंग करते हुए, आप कई झरने, क्रिस्टल साफ पानी की तेज धारा, सुरम्य घाटियों और घने जंगल के पेड़ों के शानदार दृश्य देख सकते हैं। यकीनन प्रकृति प्रेमी और फोटोग्राफी के शौकीन लोगों के लिए यह जगह रोमांचित करने वाला है।

शेष पृष्ठ २१ पर...

देश की शान, हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पृष्ठ २० से... **शिलांग में डॉन बॉस्को संग्रहालय**

मेघालय की जनजातीय संस्कृति और सांस्कृतिक इतिहास के बारे में जानने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है डॉन बॉस्को संग्रहालय। संग्रहालय में आप स्वदेशी लेखों और कलाकृतियों का एक प्रभावशाली संग्रह देख सकते हैं, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाता है। संग्रहालय में सात मंजिलें हैं और इसमें कुल १७ गैलेरी शामिल हैं, जिनमें कलाकृतियां, पेंटिंग, आकृतियां, मूर्तियां और बहुत कुछ प्रदर्शित है। डॉन बॉस्को संग्रहालय को स्वदेशी संस्कृतियों से जुड़ा एशिया का सबसे बड़ा संग्रहालय माना जाता है और भारतीय और विदेशी पर्यटकों के लिए 'शिलांग' में सबसे अच्छे पर्यटन स्थलों में से एक है।

शिलांग में लेडी हैदरी पार्क

'शिलांग' के लाबन क्षेत्र में स्थित लोकप्रिय लेडी हैदरी पार्क है, जिसका नाम राज्य की पहली महिला और असम के राज्यपाल की पत्नी लेडी हैदरी के नाम पर रखा गया, जब आप इस पार्क में जाएंगे तो सबसे पहली चीज जो आपकी नजर आएगी वो है यहां के बगीचे को जापानी शैली में बनाना। यहाँ एक छोटी सी झील भी है जहाँ बत्तख और रंगीन मछलियाँ देखने को मिल जाएगी, यहां हर उम्र के पर्यटक घूमने के लिए आते हैं, जहां वो टहलते हुए ऑर्किड और रोडोडेंड्रोन के आकर्षक संग्रह के साथ खूबसूरती से सजे हुए लॉन को देख सकते हैं। लेडी हैदरी पार्क घूमने के अलावा फोटोग्राफी के साथ-साथ बोटिंग जैसी मजेदार गतिविधि में शामिल होने के भी कई अवसर प्रदान करता है।

वार्डस झील

वार्डस झील 'शिलांग' में मौजूद एक कृत्रिम झील है, जिसे स्थानीय रूप से पोलक झील या नॉन पोलक झील के नाम से भी जाना जाता है, यह झील चारों तरफ से वनस्पति उद्यानों से घिरा हुआ है।

इस झील पर लकड़ी का एक ब्रिज है, यहां पर नौका विहार की भी सुविधा उपलब्ध है। वार्डस झील का नाम आसाम के मुख्य आयुक्त सर विलियम वार्ड के नाम पर रखा गया है, झील के चारों और पूरे शहर की योजना बनाई गई है।

लैटलम घाटी

लैटलम कैन्यन शिलांग के दर्शनीय स्थल के खासी पहाड़ियों में बसा हुआ है। लैटलम घाटी पहाड़ों के अंत को भली भांति दर्शाता है, यह जगह ट्रेकिंग उत्साही, प्रकृति प्रशंसकों और शांति चाहने वालों के लिए एक एक बहुत ही अच्छा पर्यटन स्थल है।

घाटी की ऊंचाइयों पर जाते हैं पूरे शहर का एक अद्भुत और बेहद खूबसूरत दृश्य देखने को मिलता है, इस जगह के आसपास की सुंदरता और शांति काफी ज्यादा मनमोहक प्रतीत होती है।

कैथेड्रल चर्च शिलांग

कैथेड्रल चर्च 'शिलांग' की सबसे प्रसिद्ध चर्च में से एक है, यहां पर मदर मैरी की मूर्ति के साथ सफेद संगमरमर की भव्य इमारत स्थित है, यह जगह 'शिलांग' के सबसे प्रसिद्ध घूमने लायक जगह में से एक है।

कैथेड्रल चर्च के अंतर्गत, क्रॉस के कुछ खूबसूरत शेष पृष्ठ २२ पर...

'शिलांग' के इतिहास प्रकाशन पर
'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

Prakash Ch. Patni
Mob: 9436103116
Manoj Patni
Mob: 9436103115
Navin Patni
Mob: 9612905514
JAINTIA OIL AGENCY
Dealer: IOC Ltd. (Marketing Division)
5.J.B. Jhalupara, Shillong, Meghalaya, Bharat - 793002
Off: 0364-2546914 | Fax: 0364-2546909

पृष्ठ २१ से... टेराकोटा स्टेशन मौजूद हैं, जो यीशु के जीवन की घटनाओं को प्रदर्शित करता है।

कैलांग रॉक: मेरंग-नोखलॉ रोड पर ग्रेनाइट की एक ऊंची और विशाल चट्टान है जिसे कैलांग रॉक के नाम से जाना जाता है, यह एक गोलाकार गुम्बदनुमा चट्टान है, जिसका व्यास लगभग १००० फुट है।

चेरापूंजी

यह 'शिलांग' से ६० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, यह स्थान दुनिया भर में मशहूर है। हाल ही में इसका नाम 'चेरापूंजी' से बदलकर 'सोहरा' रख दिया गया है। वास्तव में स्थानीय लोग इसे 'सोहरा' नाम से ही जानते हैं, यह स्थान दुनियाभर में सर्वाधिक बारिश के लिए जाना जाता है, हालांकि अब यह

ख्याति इसके समीप स्थित 'मौसिनराम' ने अर्जित कर ली है, इसके नजदीक ही नोहकालीकाई झरना है, जिसे पर्यटक जरूर देखने जाते हैं, यहां कई गुफा भी हैं, जिनमें से कुछ तो कई किलोमीटर लम्बी हैं। 'चेरापूंजी' बांगलादेश सीमा से काफी करीब है, इसलिए यहां से बांग्लादेश को भी देखा जा सकता है।

जैकरम, हाट सप्रिंग

प्रकृति की अद्भुत देन यह स्थान बहुत ही सुंदर है। गंधक-युक्त गर्म पानी, जो कि झरने से निकलता है, चर्मरोगो के लिये एक औषधि का कार्य करता है। झरने के पानी को पाईप लाईन द्वारा स्नान घर में पहुंचाया गया है, जहां पर महिला व पुरूष आराम पूर्वक स्नान कर सकते हैं। स्नान करने के बाद पूरी थकान दूर हो जाती है।

मीठा झरना: हैप्पी वैली में स्थित यह झरना बहुत ऊंचा और बिलकुल सीधा है। मॉनसून में इसकी खूबसूरती देखते ही बनती है।

शिलांग का पुलिस बाजार

आप शिलांग जा ही रहे हैं, तो यहां के मशहूर बाजार पुलिस बाजार में भी घूमने जरूर जाएं। आप चाहे स्थानीय खाने का स्वाद चखना चाहते हो और अंतरराष्ट्रीय व्यंजनों का टेस्ट लेना चाहते हो या फिर कपड़े खरीदना चाहते हो या कुछ स्थानीय हस्तशिल्प खरीदना चाहते हो, पुलिस बाजार में आपको वो सब कुछ मिलेगा जिसकी इच्छा आप रखते हैं। 'शिलांग' की यात्रा पुलिस बाजार में आए बिना अधूरी है, क्योंकि यह 'शिलांग' में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है।

शिलांग का प्रसिद्ध स्थानीय भोजन

'शिलांग' अपने पर्यटन स्थलों के साथ साथ व्यंजनों के लिए भी काफी अधिक प्रसिद्ध है। यहां पर खाने के लिए बहुत से व्यंजन देखने को मिलते हैं जैसे की मोमोज, दोह-खलीह, जादोह शिलांग, नखम बिच्ची, डोहनेइओंग, पुमालोई, मिनिल सोंगा, पुथारो, पुखलीन, शीर सेवन इत्यादि।

वैसे तो 'शिलांग' में खाने लायक काफी अच्छे और स्वादिष्ट व्यंजन उपलब्ध हैं, परंतु शिलांग शहर के प्रसिद्ध और स्थानीय भोजन में जदोह, तुंगरामबाई, क्यात, कटुंग और कीकटू जैसे कुछ बेहतरीन स्थानीय व्यंजन हैं, जिन्हें शिलांग की यात्रा के दौरान स्वाद लिया जा सकता है। जय भारत!

'शिलांग' के इतिहास प्रकाशन पर
'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

Sangeeta Sharma
श्री श्याम बाबा आराधिका एवं समाज सेविका
Mob: 98631 13232
Opp. B.R. Fabric Hub, Police Bazar, Shillong,
Meghalaya (East khasi Hills), Bharat - 79300

जैन मंदिर के दर्शन से ही हृदय धर्ममय हो जाता है

शिलांग: शिलांग में जैन चैत्यालय की स्थापना हंसराज जी गुणमाला देवी पांड्या के द्वारा उनके ही निवास स्थान पर अक्टूबर १९७२ को विजयदशमी के दिन किया गया था। लगभग ३० वर्षों तक जिन चैत्यालय उनके निवास स्थान पर रहा, जब यह परिवार को राजस्थान शिफ्ट होना था, शिलांग समाज की सहमति से चैत्यालय को किराए के घर में स्थापित किया गया। लगभग १८ वर्षों तक जिन चैत्यालय किराए के मकान में रहने के बाद शिलांग समाज के पुण्योदय से गुवाहाटी के धर्मात्मा परिवार रतनलाल जी भागचंद जी सरावगी के द्वारा दान की गई भूमि पर नवीन जिन चैत्यालय का निर्माण हुआ। २२ जनवरी २०१८ को जिन चैत्यालय की स्थापना की

गई। चैत्यालय की विशेषता यह है कि जो भी दर्शन करने के लिए आता है वह कहता है कि मंदिर में आकर बहुत ही आनंद और शांति का अनुभव होता है। शिलांग का पूरा समाज दर्शन के लिए आता ही है, शिलांग घूमने के लिए जितने भी सैलानी आते हैं, वे भी मंदिर का दर्शन कर पुण्य के भागीदार बनते हैं।

- महावीर पहाड़िया
शिलांग

हेल्थ कैंप के आयोजन के साथ 'जय भारत' बोलने का भी संकल्प लिया गया- नीरज सिंदवानी

नयी दिल्ली: ३ मार्च २०२४ को 'मैं भारत फाउंडेशन हूं' के तत्वावधान में ओम रियल स्टेट के मालिक नीरज सिंदवानी द्वारा पॉकेट-१, सेक्टर २४, रोहिणी, दिल्ली में निशुल्क हेल्थ कैंप का आयोजन किया गया। हेल्थकैंप में काफी लोग उपस्थित थे, हेल्थ कैंप में वजन, बीपी जांच, शुगर जांच की निशुल्क व्यवस्था की गई थी।

'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के पत्रकार दिवाकर जी ने हेल्थकैंप में आए लोगों से बात की, उनके विचारों को जाना, लोगों ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम समय-समय पर होते रहने चाहिए। रोहिणी के हर सेक्टर में ऐसे कैंप आयोजित होते रहेंगे तो बुजुर्ग वर्ग को इसका ज्यादा लाभ मिलेगा।

लोगों द्वारा इस आयोजन को काफी प्रोत्साहन मिला, साथ ही वहां उपस्थित सभी लोगों ने संकल्प लिया कि 'भारत को केवल 'भारत' ही बोलेगें', इंडिया नहीं' इस अभियान का संपूर्ण सहयोग करते हुए यह भी कहा गया कि जो भारतीय विदेशों में रह रहे हैं उन्हें भी अपने देश को 'भारत' नाम से संबोधित करना चाहिए। 'मैं भारत हूं फाऊंडेशन' ओम रियल स्टेट के मालिक नीरज सिंदवानी जी द्वारा आयोजित किए गए निशुल्क हेल्थकैंप के लिए धन्यवाद प्रेषित किया गया। जय भारत!

'शिलांग' के इतिहास प्रकाशन पर
'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं

Assam Oil

ASSAM AUTO AGENCIES
DEALERS:
IOC LTD. (ASSAM OIL DIVISION)
Jowai Road, Shillong, Meghalaya, Bharat- 793 003
Off: 2520855 E-Mail: saraogis@hotmail.com

श्री शिलांग गौशाला समिती मेहनत और समर्पण की एक मिसाल

वर्तमान शिलांग गौशाला

श्री शिलांग गोशाला की जमीन १९५६ में शिलांग के भामाशाह गोयनका परिवार के द्वारा गोशाला के लिए प्रदान की गई थी और उसके बाद शिलांग के बड़े बुजुर्गो ने धीरे-धीरे यहां पर गोशाला का संचालन शुरू किया गया, मगर यह गोवध देश होने के कारण शिलांग में गोशाला का विरोध होता रहा। मगर शिलांग के बुजुर्गों ने मुकाबला करते हुए गोशाला को चलाते रहे, जिन्होंने गौशाला का शुभारंभ शिलांग में किया वो आज हमारे बीच नहीं हैं मगर उनकी यादें और समर्पण आज भी समाज के बीच कायम है, जिनमें रतनलाल सिंघानिया, देवीदत्त टिबड़ेवाल, दीपचंद गोयल (निर्मल मोटर्स) विश्वनाथ झुनझुनुवाला, टीकाराम जी सिंघानिया, रामकुमार जी चौधरी, नागरमल बावरी, लादुराम जी बावरी, जगन्नाथ जी बावरी, महावीर प्रसाद साह, रामनिरंजन बजाज, मोहनलाल जालेवा, राधेश्याम जाजोदिया, रामेश्वर जी गोयनका, हरीराम गोयंका, कांशीराम जी कालीपुंग, हीरालाल जसरासरिया, रामगोपाल जी सिंघानिया, डुंगरमल जी सिंघानिया, गजानंद जी चाचान, उमादत्त झुनझुनुवाला, कन्हैयालाल मंडावेवाला, घेवरचंद अग्रवाल, बच्छराज सुराणा, केसरी चन्द सेठिया, रामगोपाल जालान, सत्यनारायण जसरासरिया, भगवानदास झुनझुनुवाला, गुलाब चंद शर्मा, शिवकुमार जी अग्रवाल, सहित कई और बुजुर्ग थे जिन्होंने बहुत गहराई से गौशाला का गठन कर संचालन किया, उस समय पैसा का अभाव होने के कारण गोशाला में लगी हुई सब्जियां तोड़कर बेचते थे, जिसका जिम्मा मोहनलाल जालेवा, रामनिरंजन बजाज के पास था, जो बड़ा बाजार में सब्जी सप्लाई करके गायों के लिए चारा वगैरह खरीदते थें।

समाज का सहयोग होते-होते गोशाला में गायों की सुरक्षा और सुविधा के लिए कच्चा निर्माण शुरू किया और छोटा-मोटा टीन सैड वगैरह बनाया गया। शिलांग गौशाला के पास बहुत बड़ी जमीन है, मगर यहां के लोकल लोगों के विरोध के कारण उस जमीन को डबलप नहीं कर पाए, धीरे-धीरे कमेटी का गठन हुआ और कुछ कुछ सालों के बाद नई कार्यकारिणी बनने लगी। मगर वर्तमान में पिछले १० सालों से शिलांग गौशाला का भार युवा कार्यकारणी को सौंपा गया और गोशाला का जिर्णोद्धार शुरू हुआ। देखते ही देखते गोशाला में गोपाष्टमी मेला भरने लगा। युवा कार्यकारणी का जोश इतना रहा की हर मुश्किल का सामना करते हुए यह साबित कर दिया की अगर करना चाहें तों क्या नहीं कर सकते? गोशाला में देशी गायों का आगमन हुआ, युवा कार्यकारणी ने समाज के सहयोग से गोशाला में हर सुविधा करने का संचालन शुरू कर दिया, देखते ही देखते गोशाला ने भव्य रुप लेना शुरू कर दिया। एक समय ऐसा था की दिन के समय में भी गोशाला में जाना संभव नहीं था, डर-भय का माहोल बना रहता था और आज की स्थिति में शिलांग गोशाला से बच्चा-बच्चा परिचित हो गया है।

पहले २५% लोगों को ही मालुम था की शिलांग में गौशाला है, मगर आज कार्यकारणी की मेहनत से 'गौशाला' का नाम हो गया है। शिलांग गौशाला में यहां की सरकार का कोई योगदान नहीं, गौशाला में कभी अनहोनी घटनाऐं हुई हैं तब भी यहां की सरकार ने कोई मदद नहीं की। गौशाला की वर्तमान कार्यकारणी का यह दुसरा कार्यकाल चल रहा है, जब भी समाज की सभा हुई है, तब सभी ने इसी युवा कार्यकारणी को दुबारा से मनोनीत करने का प्रस्ताव पारित किया है।

'शिलांग गोशाला' शिलांग से गुवाहाटी जाने वाले मुख्य मार्ग मोलाई इलाके में स्थित है। शिलांग गौशाला में मारवाड़ी, नेपाली, बिहारी, समाज का काफी आवागमन रहता है, वर्तमान में शिलांग शहर के जाने-माने स्वर्गीय शिव कुमार जी अग्रवाल का पुत्र श्री अजय कुमार अग्रवाल अध्यक्ष हैं, समाज गो सेवार्थ अपना योगदान हर समय पर देता हैं। मेघालय प्रकृति की सुंदरता के लिए जाना जाता है, यहाँ एक से बढ़ कर एक पर्यटन स्थल है, पर्यटकों का ताता हमेशा लगा रहता है, इसी बिच राजधानी शिलांग में देखने लायक एक जगह भी है खास कर के गौ प्रेमियों के लिए जिसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं, हम बात कर रहे है शिलांग के मौलाई इलाके में स्थित 'श्री श्री शिलांग गौशाला' जिसकी ख़ास बात यह है की इस छोटे से गौशाला को यहाँ की मारवाड़ी समिति ने इतनी अच्छी तरह संभाल कर इसका प्रबंध किया है की देखने वालों का मन खुश हो जाता है।

यह गौशाला शिलांग के सबसे पुराने यादगारों में से एक है, जिसकी स्थापना १९५६ में की गई थी। हांलाकि इस गौशाला ने बहुत सारे उतार-चढ़ाव देखे, बहुत सारी मुश्किलें आईं, मगर कार्यकारिणी ने हर मुश्किल का सामना करते हुए गौशाला को बचाया, अब इस गौशाला का कार्यभार जब से नई समिती ने अपने हाथों में लिया है, इसकी रंगत बदल गई है।

इस वक्त इस गौशाला में सौ के ऊपर विभिन्न नस्लों के गौ वंस हैं, जिसकी देखभाल की जिम्मेदारी वर्तमान कार्यकारणी समिति संभाल रही है, गायों की देखभाल, के लिए यहाँ कर्मचारी रखे हुए हैं जो गायों की देखभाल, साफ़ सफाई मन लगा कर करते है, समिती की तरफ से यहाँ वेटनरी चिकित्सक भी नियुक्त किये गए हैं जो हर समय गायों की स्वस्थ चिकित्सा करते हैं।

शिलांग गौशाला से सुबह-शाम दूध का वितरण होता है, जो निर्धारित स्थानों पर वितरण किया जाता है, जैसे जैसे गौशाला में दुध बढ़ता है, तब वितरण का दायरा बढ़ा दिया जाता है, अब धीरे धीरे यह गौशाला अपने मिशन को आगे बढ़ा रही है जो एक सराहनीय कदम है। गौशाला में जाने से मन खुश होता है, इस गौशाला में गायो का स्वास्थ देख कर ही अंदाजा लगा सकते है की गायें यहाँ पर कितनी खुश हैं। गौशाला में जो दुध की उत्पत्ति होती है, उसे एक निर्धारित उचित मूल्य में समाज के लोगों में वितरित किया जाता है, इससे जो भी पैसा मिलता है वह गौशाला फंड में जाता है और वो गौशाला के कार्य में खर्च होता है।

शिलांग में मारवाड़ी समाज द्वारा स्थापित समिति

श्री मारवाड़ी पंचायत, शिलांग

स्थापना: २० मई १९२५

मारवाड़ी समाज के विकास के लिए समर्पित 'श्री मारवाड़ी पंचायत' की स्थापना मारवाड़ी समाज के विशिष्ट महानुभावों द्वारा की गई थी।

तत्कालीन पदाधिकारियों ने सर्वसम्मति से एक संविधान तैयार किया, जिसमें इस बात का निर्णय हुआ की मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित समस्त संस्थाएं श्री मारवाड़ी पंचायत के अंतर्गत मानी जाएगी।

श्री मारवाड़ी पंचायत के अंतर्गत आने वाली संस्थाओं का विवरण :

१. श्री राजस्थान विश्राम भवन
२. आर. बी. अनुपचंद हाई सेकेंडरी स्कुल
३. श्री शिलांग गौशाला
४. श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर
५. श्री मारवाड़ी पुस्तकालय
६. श्री हनुमान जयंती उत्सव समिति
७. बारापथार स्मशान

श्री मारवाड़ी पंचायत की उपलब्धियां

निःशुल्क स्वास्थ परिक्षण शिविर

केंतोमेंट बोर्ड शिलांग के साथ मिलकर जे.आर.जी. केन्तोमेंट हास्पिटल में श्री मारवाड़ी पंचायत ने कुशल डाक्टरों की देखरेख में निःशुल्क स्वास्थ परिक्षण शिविर लगाया जाता है, जिसमें जरुरतमंद समाज के सैकड़ों वृद्ध, युवा महिलाओं और बच्चे लाभान्वित होते है। श्री मारवाड़ी पंचायत द्वारा निःशुल्क दवाएं भी वितरित की जाती है।

श्री युगराज जैन का अभिनन्दन

२०-०८-२०१० को शुभम चेरिटेबल असोसिएसन द्वारा आयोजित 'बहना सुन मेरी कहना' कार्यक्रम में मुंबई से प्रसिद्ध प्रवक्ता, कवि, कलाकार श्री युगराज जैन का श्री मारवाड़ी पंचायत शिलांग द्वारा अभिनन्दन किया गया।

उक्त कार्यक्रम में समाज की महिलाओं व पुरुषों ने बड़ी तादाद में भाग लिया। श्री मारवाड़ी पंचायत द्वारा इस अवसर पर प्रीति भोज का आयोजन भी किया गया था।

श्री राजस्थानी दुर्गा पूजा समिति

स्थापना: सन १९६१

संस्थापक सदस्य स्वर्गीय नौरंग राय चाचान की प्रेरणा से श्री महाबीर चाचान, श्री संतोष चाचान, श्री गिरधारी जाजोदिया, श्री बिनोद मंदावेवाला द्वारा मिलकर सन १९६१ में श्री राजस्थानी दुर्गा पूजा समिति की स्थापना की, जिसके तहत सर्वप्रथम राजस्थानी समाज द्वारा नवरात्र के शुभ अवसर पर दुर्गा पूजा का आयोजन सन १९६१ में चुना गोदाम में मात्र १५ रूपए के चंदे से प्रारम्भ किया गया था।

प्रयास चाहे छोटा था, पर भावना सच्ची थी, लगन और विश्वास पक्का था, करीब ४ वर्ष तक चुना गोदाम में ही यह आयोजन ऐसे ही सामान्य रूप से चलता रहा। सन १९६४ में स्वर्गीय श्रद्धेय गजानंद जी चाचान की प्रेरणा से यह आयोजन उनके गरीखाना निवास में किया गया। चाचान परिवार की अगुवाई में किया गया यह प्रयास रंग लाने लगा, धीरे धीरे समाज के अन्य लोग जुड़ते चले गए और १९६५ में राजस्थानी दुर्गा पूजा का आयोजन 'राजस्थान विश्राम भवन' में किया जाने लगा, इस संस्था को साथ देने जो विशेष लोग आगे आये उनमें सर्वश्री रोहित सराफ, सुरेश सिंघानिया, रमेश बावरी, बनवारीलाल बजाज, श्यामसुंदर जलेवा, राजकुमार जलेवा, कैलाश सराफ, सजन चौधरी प्रमुख थे।

१९६१ में प्रारंभ की गई नवरात्र दुर्गा पूजा की यह परम्परा नित नई ऊँचाइयों को छूती हुई आज अपनी उच्च पराकाष्ठा पर है।

इस पुनीत यज्ञ में स्वर्गीय नागरमल बावरी एवं स्वर्गीय श्यामलाल सिंघानिया का सहयोग सदैव याद रखा जायेगा, इसी तरह श्री राजस्थानी दुर्गा पूजा समिती अपनी निष्ठा, विश्वास, समर्पण की भावना से आगे बढती हुई १९८५ में रजत जयंती समारोह मना चुकी है।

श्री राजस्थानी दुर्गा पूजा समिती का रजत जयंती समारोह श्री ओमप्रकाश जी अगरवाल की अध्यक्षता में पुरे जोश खरोश के साथ मनाया गया. इस सुअवसर पर एक सोविनिअर का प्रकाशन किया गया।

श्री तेरापंथ मंडल : स्थापना एवं परिचय

तेरापंथ धर्मसंघ आचार्य भिक्षु द्वारा स्थापित अध्यात्म प्रधान धर्मसंघ है, जिसकी स्थापना २९, जून, १७६० को हुई थी। यह जैन धर्म की शाश्वत प्रवाहमान धारा का युग-धर्म के रूप में स्थापित एक अर्वाचीन संगठन है, जिसका इतिहास लगभग २५० वर्ष पुराना है। प्रारम्भ में इस धर्म संघ में तेरह साधु तथा तेरह ही श्रावक थे, इसलिए इसका नाम 'तेरापंथ' पड़ गया। संस्थापक आचार्य श्री भिक्षु ने उस नाम को स्वीकार करते हुए उसका अर्थ किया -'हे प्रभो! यह तेरापंथ है।'

उद्देश्य

१. सभाओं के संगठन एवं अनुशासन को मजबूत करना
२. तेरापंथ धर्मसंघ एवं संघपति के प्रति आस्था संपुष्ट करना
३. चतुर्विध धर्मसंघ के हित के लिए कार्य करना एवं उनके हितों की सुरक्षा करना
४. आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के प्रति आदर की भावना विकसित करना
५. देश-विदेश में फैली तेरापंथी सभाओं व समाज का सार-संभाल व दिशा निर्देश देना

तेरापंथ जैन धर्म का एक अत्यंत तेजस्वी और सक्षम संप्रदाय है। आचार्य भिक्षु इसके प्रथम आचार्य थे, इसके बाद क्रमश: दस आचार्य हुए, इसे अनन्य ओजस्विता प्रदान की चतुर्थ आचार्य जयाचार्य ने और नए-नए आयामों से उन्नति के शिखर पर ले जाने का कार्य किया नौवें आचार्य श्री तुलसी ने, उन्होंने अनेक क्रांतिकारी कदम उठाकर इसे सभी जैन संप्रदायों में एक वर्चस्वी संप्रदाय बना दिया। दशवें आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने इस धर्मसंघ को विश्व क्षितिज पर प्रतिष्ठित किया और ग्यारहवें आचार्य श्री महाश्रमण इसे व्यापक फलक प्रदान कर जन-मानस पर प्रतिष्ठित कर रहे हैं।

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

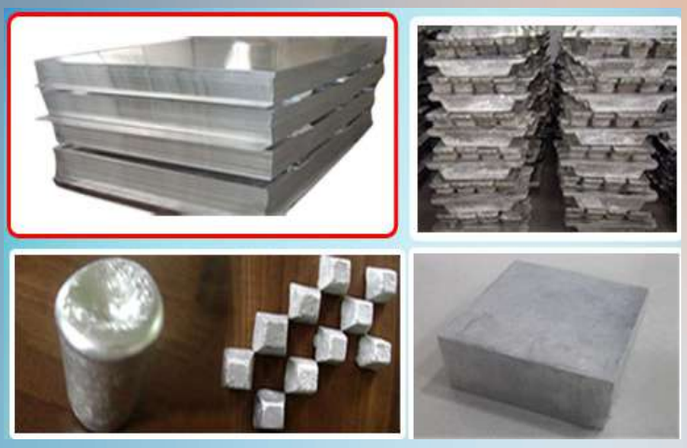

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि
मैं भारत हूँ

प्रकाशचंद पाटनी
अध्यक्ष दिगम्बर जैन समाज शिलांग
सुजानगढ़ निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३६१०३११६

प्रकाशचंद जी अपनी कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'शिलांग' को 'स्कॉटलैंड ऑफ ईस्ट' कहा जाता है। पहले 'शिलांग' एक छोटा सा टाउन था, यहां सुविधाओं की कमी थी, लोगों के घर लकड़ियों के हुआ करते थे पर आज 'शिलांग' पूरी तरह से बदल गया है, हर तरह की सुविधाएं 'शिलांग' में मौजूद है, लोगों के घर पक्के बन गए हैं, होटल कारोबार बड़े पैमाने पर होता है। यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग यहां बसे हैं, यहां राजस्थानी समाज के हजारों की संख्या में परिवार है, राजस्थानी समाज द्वारा मारवाड़ी धर्मशाला व विश्राम घर बनाया गया है। दिगम्बर जैन समाज के लगभग ४०-५० परिवार निवास करते हैं। यहां जैन चैत्यालय भी बना है, श्वेताम्बर समाज के भी कई परिवार यहां निवास करते हैं। व्यापार की बात की जाए तो यहां सभी तरह के व्यापार होते हैं। यहां राजस्थानी समाज के लोग मुख्यतः व्यवसाय से ही जुड़े हैं। 'शिलांग' की सब्जी, फल व अन्य कई वस्तु प्रसिद्ध है जिनका निर्यात किया जाता है, टूरिज्म का भी यहां बहुत बड़ा विस्तार हो रहा है, कई पांच सितारा होटल बन गए हैं। पर्यटन की बात की जाए तो 'शिलांग' के पास चेरापूंजी, मासिनराम, डॉवकी घूमने के पर्यटक स्थल हैं। शिलांग में वर्ड लेक, लेडी हैदरी पार्क, शिलांग पीक, एलिफेंट वाटर फॉल घूमने की जगह हैं, जिन्हें देखने लोग यहां आते हैं ऐसे अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'शिलांग' में...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

प्रकाशचंद जी मूलतः राजस्थान के 'सुजानगढ़' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'सुजानगढ़' में ही संपन्न हुई है। पिछले ५० सालों से आप शिलांग में बसे हैं और वर्तमान में पेट्रोल पंप के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, दिगम्बर जैन समाज में अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं। जय भारत!

देवेंद्र सिंघानिया
व्यवसायी व समाजसेवी
बिसाऊ निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८६३४९५७७०

देवेंद्र जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि हमारा बचपन 'शिलांग' में ही बीता है, उस समय को हम गोल्डन डेज के रूप में कह सकते हैं, उस समय कोई भेदभाव नहीं था, सभी के बीच अपनापन और प्रेम व्यवहार था। यहां के मूल निवासियों से भी संबंध बहुत ही अच्छे हैं, सभी एक दूसरे के साथ मिलजुल कर रहते हैं पर अब इस समय थोड़ा बदलाव आ गया है, पहले यहां लोगों के घर लकड़ी के हुआ करते थे, अब यहां सभी के घर कंक्रीट बन गए हैं। पिछले १० सालों में विकास तो बहुत तेजी से हुआ है, पहले जहां सिंगल लेन सड़क थी, आज फोर लेन सड़क बन गई है, एयरपोर्ट भी यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित है, जहां प्रतिदिन कोलकाता के लिए फ्लाइट उपलब्ध है और दिल्ली के लिए सप्ताह में एक बार। यहां राजस्थानी समाज के लगभग ६०० परिवार निवास करते हैं जिसमें अग्रवाल, जैन, ओसवाल, माहेश्वरी, ब्राह्मण सभी समाज के परिवार बसे हुए हैं, सभी के बीच सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, यहां समाज द्वारा लक्ष्मीनारायण मंदिर, हनुमान मंदिर व अन्य मंदिर बनाया गया है। समाज द्वारा राजस्थानी विश्राम भवन का भी निर्माण किया गया है। व्यापार की बात की जाए तो यहां पर्यटन व्यापार को बहुत बढ़ावा मिल रहा है, इसके अलावा यहां कई उद्योग व्यापार भी होते हैं, यहां की सब्जी और मौसमी फल भी बहुत प्रसिद्ध है, स्ट्रॉबेरी, बनाना, ऑरेंज जैसे फल बहुत ही अच्छे उत्पादन होते हैं, यहां के स्थानीय फलों में प्रसिद्ध सॉफ्टलॉन्ग, जिनका निर्यात भी किया जाता है, यहां का प्रमुख बाजार बड़ाबाजार और पुलिस बाजार है। पर्यटन की बात की जाए तो यहां से 'चेरापूंजी' मात्र कुछ ही घंटे की दूरी पर स्थित है, कई लेक और वॉटरफॉल हैं, जिसे देखने लोग दूर-दूर से आते हैं, यहां का मलाई म्यूजियम भी बहुत प्रसिद्ध है, जो डॉन बॉस्को म्यूजियम के नाम से जाना जाता है ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'शिलांग' में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

देवेंद्र जी मूलतः राजस्थान स्थित 'बिसाऊ' के निवासी हैं। आपका परिवार १८७६ से 'शिलांग' में बसा हुआ है, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'शिलांग' में ही संपन्न हुई है, यहां आप मेडिसिन ट्रेडिंग के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं, मारवाड़ी सम्मेलन, अग्रवाल समिति जैसी कई संस्थानों में सक्रिय हैं। जय भारत!

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिन्दी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

महावीर पहाड़िया

सदस्य श्री दिगम्बर जैन समाज शिलांग
लाडनूं निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३६११६६८०

महावीर जी अपनी कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'शिलांग' पहले एक छोटा सा हिल स्टेशन था, आज टूरिस्ट हब बन गया है, 'मेघालय' में पहले कोयले का खनन सबसे बड़े पैमाने पर किया जाता था, लेकिन अब इस पर रोक लगा दी गई है, 'मेघालय' के दो प्रमुख स्थान मौसमग्राम और चेरापूंजी दुनिया के सबसे अधिक वर्षा वाले क्षेत्र है, 'मेघालय' को बादलों का घर भी कहा जाता है और 'शिलांग' को स्कॉटलैंड आफ ईस्ट कहा जाता है, यहां का मौसम हमेशा सुहावना रहता है। यहां के प्रमुख जनजाति खांसी, गारो और जयंतिया है, इनका प्रमुख धर्म इसाई है, इसके अलावा अन्य धर्मावलम्बी जैसे जैन, मुस्लिम, हिंदू, बंगाली, सिख, बिहारी आदि सभी लोग बसे हुए हैं। यहां सभी लोगों का आपस में मेल मिलाप बहुत ही उत्तम है। यहां दिगम्बर जैन समाज के लगभग ४० परिवार निवास करते हैं, यहां जैन मंदिर बना हुआ है, जिसमें मूल नायक प्रतिमा तीर्थंकर महावीर स्वामीजी की स्थापित है। 'शिलांग' में मारवाड़ी समाज द्वारा राजस्थान विश्राम भवन और कुछ मंदिर भी बने हैं। व्यापार उद्योग की बात की जाए तो यहां सीमेंट की कई फैक्ट्रियां हैं, साथ ही लाइमस्टोन की माईनिंग भी की जाती है, यहाँ मुख्यत: ट्रेडिंग का कारोबार होता है। कृषि की बात की जाए तो 'मेघालय' सब्जी और फलों के लिए जाना जाता है और फलों में यहां पाइनएप्पल, संतरा, प्लम, स्ट्राबेरी विशेष रूप से पैदा होते है। पर्यटन में यहां कई वॉटरफॉल्स और लेक हैं, इसके अलावा यहां की डॉवकी नदी (स्नाकपेंडेंग) है, इस नदी की विशेषता यह है कि यह सबसे साफ और स्वच्छ है और इसकी तलहटी उपर से ही दिखाई देती है। यहां पर एक 'मॉयलीनांग' गांव है जो एशिया का सबसे साफ स्वच्छ गांव कहा जाता है, जिसे कई बार स्वच्छता के लिए पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं। 'शिलांग' एक महिला प्रधान क्षेत्र है, यहां घर की सबसे छोटी बेटी को पूरी प्रॉपर्टी और बिजनेस पर हक होता है। यहां लड़के शादियों के बाद लड़की के घर जाते हैं, ऐसी अनेक कई विशेषताएं और बातें हैं हमारे 'शिलांग' (मेघालय) में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अपने देश का एक ही नाम 'भारत' और इसमें रहने वाले नागरिक की एक ही पहचान 'भारतीय' रहनी चाहिए।

महावीर जी मूलत: राजस्थान स्थित 'लाडनूं' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'लाडनूं' में ही संपन्न हुयी है। सन् १९७८ से आप 'शिलांग' में बसे हैं एवं यहां पर पेट्रोल पंप मैनेजमेंट के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं, साथ ही दिगम्बर जैन समाज 'शिलांग' के सदस्य हैं, मारवाड़ी समाज से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

पवन शर्मा

व्यवसायी व समाजसेवी
चूरू निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८६२७८५९३६

पवन जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मेघालय को अलग राज्य का दर्जा १९७१ में दिया गया था, १९७१ के पहले यह क्षेत्र असम में था, १९७९ के पहले मेघालय बहुत ही शांतिप्रिय राज्य था। १९७९ से यहां पर बंगाली कमोडिटी के साथ स्थानीय खांसी समुदाय के बीच फाईट हुई थी, उसके बाद से ही मेघालय की राजधानी शिलांग यूं कहे तो पूरे मेघालय में गैर आदिवासियों के खिलाफ कुछ ना कुछ आए दिन अप्रिय घटना होती रहती है। खांसी हिल्स में मेघालय के गारो हिल्स में काफी शांति है, वहां पर डेवलपमेंट का कार्य भी काफी तेजी से हो रहा है, परंतु खांसी हिल्स में एनजीओ का आए दिन कुछ न कुछ आंदोलन होता रहता है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से 'शिलांग' बहुत ही सुंदर स्थान है, यहां कई झरने, झील और कई पर्यटन स्थल हैं, जहां लोग जाना पसंद करते हैं। गर्मी में भी यहां का मौसम ३० डिग्री से ऊपर नहीं जाता, यहां का मौसम हमेशा सुहावना रहता है। यहां के सामाजिक वातावरण के बात की जाए तो पहले की अपेक्षा यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही अच्छा है। यहां राजस्थानी समाज की संख्या हजार के करीब है, हर समाज की अपनी सामाजिक संस्थाएं बनी हुई हैं, यहां राजस्थानी समाज द्वारा राजस्थानी विश्राम भवन का भी निर्माण किया गया है। यहां हर त्यौहार बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है, यहां राजस्थानी समाज द्वारा लक्ष्मी नारायण मंदिर, हनुमान जी का मंदिर और शनि जी का मंदिर बनाया गया है। 'शिलांग' में राणी सती मंदिर, शिव मंदिर, मुक्तिधाम व गौशाला भी मारवाड़ी समाज द्वारा कार्यरत है। व्यापार की बात की जाए तो यहां हर तरह का व्यापार होता है, सीमेंट की इंडस्ट्रीज है पर गिनी चुनी, कृषि को यहां प्रधानता मिली है यहां का ऑरेंज और पाइनएप्पल बहुत ही प्रसिद्ध है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'शिलांग' में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि प्राचीन काल से हमारे देश का नाम 'भारत' था और 'भारत' ही रहना चाहिए।

पवन जी मूलत: राजस्थान स्थित 'चूरू' के निवासी हैं। आपका परिवार लगभग ९० सालों से 'शिलांग' में बसा हुआ है। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'शिलांग' में ही संपन्न हुई है, यहां आप ठेकेदार के रूप में कार्यरत हैं। विभिन्न सामाजिक धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हैं। पूर्वोत्तर भारत मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त मंत्री रहे हैं, मारवाड़ी पंचायत से जुड़े हैं, राजस्थानी विश्राम भवन के कार्यकारिणी सदस्य हैं, भाजपा के संस्थापक सदस्य रहे हैं। खांडल विप्र महासभा के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

देश की शान, हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

अशोक बजाज

व्यवसायी व समाजसेवी
लक्ष्मणगढ़ निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३६१०३५२८

अशोक जी अपनी कर्मभूमि और जन्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले का शिलांग और आज के शिलांग में काफी परिवर्तन आया है। १९७१ के पहले यह असम राज्य की राजधानी हुआ करता था पर अब मेघालय की राजधानी है, यहां हर क्षेत्र में परिवर्तन आए हैं, प्राकृतिक दृष्टिकोण से 'शिलांग' आज भी सुंदर है। शिलांग में जो परिवर्तन आए हैं उसमें सबसे अधिक यहां ट्रैफिक की समस्या सबसे अधिक होने लगी है, प्रदूषण भी बढ़ने लगा है, पहले लोगों के घर कच्चे और लकड़ी के बने होते थे, आज हर जगह आरसीसी के घर दिखाई देते हैं, यहां कई स्थल है पर्यटन के लिए, यहां पर्यटन को काफी बढ़ावा मिला है, यहां घूमने फिरने के लिए सबसे प्रमुख स्थान 'चेरापूंजी' मोसमराम जहां प्राकृतिक रूप से गुफा के भीतर शिवलिंग बना है, साथ ही नंत्यांग नामक स्थान जहां पर एक शक्ति पीठ है, कहा जाता है कि यहां पर जहां मां का एक अंश गिरा था, इसके अलावा एलिफेंट फॉल्स, उयियाम लेक, वार्ड लेक, डॉवकी जैसे कई प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। यहां गुवाहाटी से कार और बस तथा कोलकाता व दिल्ली के लिये फ्लाईट भी उपलब्ध है। यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है, मारवाड़ी समाज के यहां लगभग ८०० परिवार निवास करते हैं। मारवाड़ी समाज के बीच सामंजस्य, मेल-जोल बहुत ही उत्तम है। लोगों का एक दूसरे के प्रति अपनत्व की भावना है और एक दूसरे के धार्मिक और सामाजिक कार्य में बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं, यहां हर पर्व मिलजुल कर मनाया जाता है। यहां के मूल निवासी जिन्हें ट्राईबल्स कहा जाता है, खासी, जयन्तिया और गारो जनजाति के हैं, सभी के अपने रीति-रिवाज और नियम भी हैं। व्यवसाय की बात की जाए तो 'शिलांग' में कोयला का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है, इसके अलावा यहां कृषि क्षेत्र में तेजपत्ता, फूल झाड़ू, अदरक जैसे कई वस्तुएं विशेष रूप से होती हैं। यहां राजस्थानी समाज के लोग मुख्यत: व्यवसाय में ही कार्यरत हैं, सभी फूड ग्रेन, ट्रेडिंग व अन्य व्यापार से जुड़े हैं, यहां समाज द्वारा कई मंदिर धर्मशाला और गौशाला का भी निर्माण किया गया है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'शिलांग' में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारे देश का प्राचीन नाम है।

अशोक जी मूलत: राजस्थान स्थित 'लक्ष्मणगढ़' के निवासी है। आपका परिवार लगभग ११० सालों से 'शिलांग' में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'शिलांग' में ही संपन्न हुई है, यहां आप हार्डवेयर के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन शिलांग के सदस्य हैं, लायंस क्लब से भी जुड़े हुए हैं, वर्तमान में अखिल भारतीय कल्याण आश्रम 'शिलांग' शाखा के उपाध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

प्रदीप चोखानी

कोषाध्यक्ष रेड क्रॉस सोसाइटी मेघालय
मुकुंदगढ़ निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३६३३३२४७

प्रदीप जी अपनी जन्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले 'शिलांग' प्राकृतिक दृष्टिकोण से बहुत ही सुंदर था, लोगों के घर कच्चे और लकड़ी के हुआ करते थे, आज चारों ओर कंक्रीट के जंगल दिखाई देते हैं, ट्रैफिक बहुत अधिक बढ़ गया है, रेलवे की सुविधा नहीं है, हवाई मार्ग की सुविधा सीमित मात्रा में है। यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है, लोगों का एक दूसरे के साथ सामंजस्य बहुत ही अच्छा है, खासकर मारवाड़ी समुदाय एक दूसरे के साथ बहुत ही तालमेल के साथ निवास करते हैं, हर समाज द्वारा यहां हर पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। राजस्थानी समाज द्वारा यहां राजस्थानी धर्मशाला, मंदिर बनाया गया है, जिनमें राणी सती जी का मंदिर, हनुमान जी का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है, यहां गौशाला भी बनी हुई है। व्यवसाय की बात की जाए तो यहां हर तरह का उद्योग व्यापार होता है, कृषि में यहां हल्दी, शहद, अदरक अधिक होते हैं, जिसका निर्यात भी किया जाता है, पर्यटन की दृष्टिकोण से 'शिलांग' बहुत ही सुंदर है, यहां कई झील और वॉटरफॉल्स है, जिसे देखने भारत ही नहीं विदेशों से भी लोग आते हैं, यहां के प्रमुख पर्यटन स्थल में 'मौसमराम' जहां प्राकृतिक शिवलिंग बना हुआ है, विशेष उल्लेखनीय है, इसके बाद 'चेरापूंजी' का स्थान आता है, जो एक हील स्टेशन है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे शिलांग में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए, 'भारत' ही हमारे देश का प्राचीन नाम है। इंडिया तो ब्रिटिशर्स की देन है।

प्रदीप जी मूलत: राजस्थान स्थित 'मुकुंदगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'शिलांग' में संपन्न हुई है, यहां आप रेडीमेड कपड़ों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। मेघालय रेड क्रॉस सोसाइटी के कोषाध्यक्ष हैं, अग्रवाल पंचायत से जुड़े हैं, हनुमान जयंती उत्सव समिति के अध्यक्ष हैं। दुर्गा पूजा समिति से जुड़े हुए हैं, आप रोटरी क्लब शिलांग हेरिटेज के कोषाध्यक्ष हैं, शिलांग स्थित गौशाला के कार्यकारिणी सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

महावीर प्रसाद सिंघानिया

अध्यक्ष शिलांग मारवाड़ी सम्मेलन
बिसाऊ निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८६३०२८०६५

महावीर जी अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि 'शिलांग' के विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि १८७२ से हमारे परदादा जी के समय से हमारा परिवार यहां बसा हुआ है, उस समय यहां जंगल ही जंगल था और यहां की आबादी मात्र चार हजार थी, आज 'शिलांग' पूरी तरह से बदल गया है। पहले हमारे परिवार का राशन का कारोबार गुवाहाटी से बैलगाड़ी के माध्यम से आता जाता था, जिसमें एक हफ्ते लग जाते थे, अब अति सुविधा बढ़ गई है, सड़क सुविधा इतना अधिक हो गयी है कि गुवाहाटी मात्र २ घंटे की दूरी पर स्थित है। प्राकृतिक रूप से 'शिलांग' आज भी बहुत ही सुंदर हील स्टेशन के रूप में जाना जाता है। यहां के प्रमुख पर्यटन स्थल में चेरापूंजी, डॉवकी, महादेव जी का मंदिर, म्यूजियम जैसे कई जगहें हैं, जहां लोग जाना पसंद करते हैं। यहां शिक्षा और अस्पताल की भी व्यवस्था ठीक-ठाक है, यहां सबसे प्रसिद्ध विद्यालय 'सेंट एडम्सन' है। यहां के मारवाड़ी बाजोरिया परिवार द्वारा बी.के. बाजोरिया विद्यालय बनाया गया है जिसमें नॉन ट्राबल्स के बच्चे पढ़ते हैं। राजस्थानी समाज की संख्या यहां अच्छी खासी है, यहां के समाज द्वारा गौशाला, धर्मशाला, मुक्तिधाम जैसे कई संस्थाएं बनाई गई हैं। मारवाड़ी समाज का आपस में तालमेल बहुत ही अच्छा है। वर्ष १९२५ में राय बहादुर अनुपचंदजी द्वारा मारवाड़ी पंचायत को दान की गई एक हिंदी स्कूल भवन भूमि है, जिसका निर्माण मारवाड़ी परिवारों ने मारवाड़ी छात्रों के लिए किया था, मेरे पिता सहित हम सभी वहां पढ़ते थे। यहां से ८० किमी दूर मोसमराम में एक शिव लिंग है। शिलांग लेकिन जनजातीय आपत्तियों के कारण कभी विकसित नहीं हुआ। हम इस शिवमंदिर के विकास के लिए भी ज्ञापन लेकर पीएम से मिलने का प्रयास कर रहे हैं। यहां के व्यवसाय की बात की जाए तो यहां कोयले का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है और कई इंडस्ट्रीज भी लगी हुई है, कृषि में यहां के ऑरेंज और पाइनएप्पल बहुत प्रसिद्ध है, जिनका निर्यात विदेश में और खासकर बैंकॉक में होता है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे शिलांग में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' नाम में हमें अपनापन लगता है, इंडिया तो अंग्रेजी नाम जिसका कोई अर्थ नहीं, अतः हमारे देश का नाम हर भाषा में 'भारत' ही रहना चाहिए।

महावीर जी मूलतः राजस्थान में स्थित 'बिसाऊ' के निवासी हैं। आपका जन्म और सम्पूर्ण शिक्षा 'शिलांग' में ही संपन्न हुई है, यहां आप प्रिंटिंग प्रेस, फ्लोर मिल व कई व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। शिलांग मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर, मारवाड़ी पंचायत के सचिव और अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

संजय सरावगी

व्यवसायी व समाजसेवी
सुजानगढ़ निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९४३६१०१८९९

संजय जी अपनी कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'शिलांग' पहले एक हिल स्टेशन की तरह था, यहां जनसंख्या कम थी, वाहनों की भी संख्या कम थी, हरियाली चारों ओर नजर आती थी, यह नॉर्थ ईस्ट का प्रमुख क्षेत्र माना जाता था, यह कॉस्मापॉलिटन शहर भी था, भारत के लगभग सभी राज्यों के लोग यहां बसे हुए थे पर आज 'शिलांग' पूरी तरह से बदल गया है, विकास के साथ-साथ यहां कंस्ट्रक्शन बहुत तेजी से हुआ है, हरियाली कम हो गई है, जनसंख्या वृद्धि के कारण यहां गाड़ियों की भी संख्या बढ गई है, जिससे ट्रैफिक की समस्या होने लगी है। सातों राज्यों में असम और मेघालय प्रमुख राज्य है और 'शिलांग' मेघालय की राजधानी है, इसलिए आज भी यह महत्वपूर्ण स्थान रखता है, समय के साथ यहां लोगों के जीवन स्तर में विकास तो हुआ ही है, साथ ही लोगों का शैक्षणिक स्तर भी बढ़ा है, आज यहां के लोग नौकरी या व्यापार के लिए अन्य क्षेत्रों में भी जाते हैं कुछ यहाँ बसे हुए हैं, व्यवसाय उद्योग की बात की जाए तो आज 'शिलांग' में कई उद्योग व्यापार हैं और यहां खेती में भी विशेषता रहती है, जिनमें आलू, गोभी, फलों में पाइनएप्पल ऑरेंज और स्ट्रॉबेरी का भी उत्पादन किया जाता है, यहां की हल्दी पूरे विश्व में विख्यात है, जिसे 'लाकाडोंग हल्दी' कहा जाता है, जो यहां के एक गांव में पाई जाती है, यहां का झाड़ू भी बहुत प्रसिद्ध है, जिसका निर्यात गुजरात व अन्य क्षेत्र में होता है। पर्यटन की दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां 'चेरापूंजी' नामक स्थान है, दुनिया में सबसे अधिक बारिश वाला क्षेत्र कहा जाता है, इसके अलावा यहां के गांव के डावकी स्थान पर नदी बहती है, जो बहुत ही स्वच्छ नदी है, इसके ऊपरी सतह से तलहटी एकदम पारदर्शी दिखाई देती है, ऐसे और भी कई प्रमुख क्षेत्र हैं, जिसके लिए हमारा 'शिलांग' प्रसिद्ध है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि हमें नाम के साथ अपने 'भारत' की अस्मिता और इसके गौरव के लिए कार्य करना चाहिए, तभी हम सच्चे भारतीय कहलाएंगे।

संजय जी मूलतः राजस्थान के 'सुजानगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म सुजानगढ़ में और संपूर्ण शिक्षा 'शिलांग' में संपन्न हुई है। आपका परिवार यहां कई पीढियों से बसा हुआ है, यहां आप पेट्रोल पंप व अन्य कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी यथासंभव सक्रिय रहते हैं। २०१८ में आपने आपकी पार्टनरशिप फर्म आसाम ऑटो एजेन्सी की, शिलांग दिगम्बर जैन मंदिर का निर्माण बहुत ही कठीनाईयों के बाद पूरा किया। ज्ञात रहे की यह मेघालय राज्य का एकमात्र जैन मंदिर है। जय भारत!

सुशील दाधीच

व्यवसायी व समाजसेवी
लक्ष्मणगढ़ निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९७७४१८४८४०

सुशील जी अपनी कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'शिलांग' प्राकृतिक दृष्टिकोण से तो बहुत ही सुंदर स्थान है, यहां कई रमणीय क्षेत्र हैं, जहां लोग पर्यटन के लिए आना पसंद करते हैं, आज 'शिलांग' टूरिस्ट हब बन चुका है, यहां टूरिस्ट लोगों का आना-जाना हमेशा लगा रहता है, यदि यहां के व्यक्तिगत सामाजिक स्थिति की बात की जाए तो पहले यहां उग्रवादिता अधिक थी पर समय के साथ परिवर्तन हुआ और लोगों के विचारों में परिवर्तन आया है, जिससे यहां उग्रवादिता कम हुई है, फिर भी यहां के जो मूल निवासी हैं ट्राइबल्स, उनके विचारों में कोई परिवर्तन नहीं आया, आज भी वे नॉन ट्राईबल्स को परेशान करते हैं, यहां मारवाड़ी समाज के अलावा बिहारी, बंगाली, नेपाली, उत्तर प्रदेश, कोलकाता व अन्य राज्यों के लोग बसे हुए हैं, सभी अपनी सामाजिक संस्थाओं द्वारा यहां के लोगों का सहयोग करते हैं। मारवाड़ी समाज ने करोना काल में यहां के ट्राईबल्स लोगों को बहुत सहयोग प्रदान किया, मारवाड़ी अपने समाज के साथ अन्य समाज के लोग भी परस्पर सहयोग और सामंजस्य के साथ निवास करते हैं। 'शिलांग' मेघालय में मारवाड़ी समाज की एक अलग ही पहचान है जहां कई ऐसे सुरवीर दानदाताओं की श्रेणी है, भले ही आज वे समाज के बीच में नहीं है मगर उन्होंने अपनी एक ऐसी छवि और पहचान बनाई है की आज समाज में एक मिशाल बने हुए है। 'शिलांग' में गौशाला, बालाजी मंदिर, श्री राजस्थानी विश्राम भवन, हिन्दी विद्यालय जैसी कई संस्थाएं हैं जो उनके द्वारा बनाई गई है, ये संस्थाए केवल मारवाड़ी समाज के लिए ही नहीं, बल्कि 'शिलांग' में हर समुदाय के काम आती है। पर्यटन की बात की जाए तो यहां का डावकी नदी बहुत ही सुंदर और स्वच्छ नदी है, जो विश्व में सबसे स्वच्छ नदी के रूप में जानी जाती है, यहां पर एक बेंत का पुल बना हुआ है, जो एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ को जोड़ता है, यह भी एक अद्भुत है, यहां का एक गांव विश्व प्रसिद्ध है जिसका उल्लेख गिनीज बुक में भी हुआ है, जो अपनी स्वच्छता के लिए जाना जाता है, ऐसी कई विशेषताएं हैं हमारे 'शिलांग' में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

सुशील जी मूलत: राजस्थान के सीकर जिले में स्थित लक्ष्मणगढ़ तहसील के 'नरोदरा' के निवासी हैं। आपका जन्म व पूर्ण शिक्षा राजस्थान में ही संपन्न हुई है, पिछले २३ सालों से आप 'शिलांग' में बसे हैं, आप मेडिसिन के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही पत्रकारिता के क्षेत्र में भी सक्रिय हैं। राजस्थानी सोशल वेलफेयर एसोसिएशन से जुड़े हैं, दाधीच ब्राह्मण समाज के कोषाध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

विमल बजाज

उपाध्यक्ष कांची कॉमकोठी विद्यालय
चूरू निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३६१११८९१

विमल जी अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'शिलांग' पहले एक गांव जैसा था, आज पूरा शहरीकरण हो गया है, पूरी तरह से शहर बन चुका है। 'शिलांग' प्राकृतिक दृष्टिकोण से बहुत ही सुंदर स्थान है, यह आज टूरिस्ट हब बन चुका है, यहां देश-विदेश से पर्यटक पर्यटन के लिए आते हैं। यहां की मुख्य जाति खासी, गारो और जयंतिया है, इन्हीं के नाम से खासी हिल बना हुआ है, इन लोगों का जीवन बहुत ही साधारण है। आजादी के बाद ८०% लोगों ने क्रिश्चियन धर्म को अपना लिया, मात्र १०% जनजाति हिंदू रीति रिवाज को अपनाए हुए हैं। यहां मारवाड़ी समाज के लगभग ६०० परिवार हैं, इसके अलावा बिहार, बंगाल, नेपाल, पंजाब व अन्य राज्यों के लोग भी बसे हुए हैं, मारवाड़ी समाज द्वारा यहां राजस्थान विश्राम भवन, हिंदी हाई स्कूल, मुक्तिधाम गौशाला जैसे कई सामाजिक संस्थाओं का गठन किया गया है, जिससे समस्त राजस्थानी परिवार जुड़ा हुआ है। इसके अलावा यहां के हर क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक की संस्था कार्यरत है। उद्योग व्यापार की बात की जाए तो यहां ट्रेडिंग से जुड़े ही सारे उद्योग व्यापार स्थापित हैं, यहां प्लाइवुड इंडस्टरीज, सीमेंट की लगभग १०-१२ फैक्ट्रियां हैं, पूरे मेघालय में कृषि के क्षेत्र में चावल की पैदावार सबसे अधिक होती है, इसके अलावा यहां फल और सब्जियां की पैदावार भी उत्तम गुणवत्ता वाले होते हैं, यहां के ऑरेंज बांग्लादेश भी जाते हैं, बनाना और पाइनएप्पल भी यहां के प्रमुख फल हैं। पर्यटन की बात की जाए तो यहां कई झील व झरने हैं, जिसे देखने लोग आते हैं, यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर 'चेरापूंजी' नामक स्थान है, जो एशिया में सबसे अधिक वर्षा वाला क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'शिलांग' में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया तो अंग्रेजों द्वारा थोपा हुआ नाम है, हमारी पहचान 'भारत' नाम से है और 'भारत' से ही रहने चाहिए।

विमल जी मूलतः राजस्थान स्थित 'चूरू' के निवासी हैं। आपका जन्म सम्पूर्ण शिक्षा 'शिलांग' में ही संपन्न हुई है। यहां आप हार्डवेयर सेनेटरी के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। विद्या भारती द्वारा संचालित कांची कॉमकोठी विद्यालय के उपाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

रमेश बावरी

सलाहकार मारवाड़ी पंचायत शिलांग
बिसाऊ निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३६११६४५६

रमेश जी अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'शिलांग' मेघालय राज्य की राजधानी है, १९७१ के पहले यह असम राज्य का हिस्सा था, जब से यह अलग राज्य बना तब से यहां के ट्राइब्लस लोगों का ही वर्चस्व अधिक है, यहां की सरकार में भी इनका ही आधिपत्य है, यहां का सामाजिक वातावरण सद्भावना पूर्ण नहीं है, यहां के नॉन ट्राईबल्स को सुविधा नहीं दी जाती, जो यहां के मूल लोगों को दी जाती है, उन्हें टैक्स भी नहीं देना पड़ता, नॉन ट्राइबलों को यहां जमीन खरीदने का भी हक नहीं है। पहले यह गांव जैसा था, यहां की जनसंख्या भी कम थी, आज जनसंख्या बढ़ गई है और ट्रैफिक जाम यहां की सबसे बड़ी समस्या बन गई है, क्योंकि क्षेत्रफल तो उतना ही है, जनसंख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यहां राजस्थानियों के लगभग ६०० परिवार निवास करते हैं। १९७१ के पहले मारवाड़ी समाज द्वारा यहां राजस्थान विश्राम भवन, गौशाला व अन्य संस्थाओं के लिए जमीन खरीदी गई और संस्थाओं का निर्माण किया गया। पर्यटन की बात की जाए तो यहां लोग पर्यटन के लिए आते हैं, यहां कई वॉटरफॉल्स, झील और पिकनिक पॉइंट है जहां लोग जाना पसंद करते हैं। व्यवसाय की बात की जाए तो यहाँ १९९६ के पहले लकड़ी व २०१४ के पहले कोयले का कारोबार बड़े पैमाने पर होता था, पर अब इन सब में बहुत कमी आ गई है। अपने राजस्थानी समाज के लोग पहले फूड ग्रेन के व्यापार में सबसे अधिक थे, आज इंडस्ट्रियल क्षेत्र में भी आ रहे हैं। स्थानीय निवासियों द्वारा यहां कृषि का उत्पादन यहां के ग्रामीणों द्वारा आलू, फूल-झाड़ू, दालचीनी व अन्य कई वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। यहां कई सीमेंट फैक्ट्रियां हैं, इनके अलावा और भी कई तरह की फैक्ट्रियां थीं, पर अब सरकार की नीतियों के कारण उनमें कमी आ गई है और नई फैक्ट्रियां लग नहीं रही हैं। ऐसी अनेक कई बातें हैं हमारे 'शिलांग' में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

रमेश जी मूलत: राजस्थान के चुरू जिले में से 'बिसाऊ' के निवासी हैं, यहां आप वर्तमान में वेयर हाउसिंग, शेयर और म्यूच्यूअल फण्ड के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

सत्यनारायण बेरीवाल

उपाध्यक्ष राजस्थानी विश्राम भवन शिलांग
सुजानगढ़ निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३६३०७२१४

सत्यनारायण जी अपनी कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'शिलांग' में बहुत तेजी से विकास हुआ है। आज यहां हर तरह की सुविधाएं आसानी से उपलब्ध होने लगी है, जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ बाजार भी बढ़ गया है। सामाजिक वातावरण की बात की जाए तो जब से 'मेघालय' अलग राज्य बना है और 'शिलांग' यहां की राजधानी बनी है, तब से यहां नॉन ट्राईबल्स को जमीन खरीदने का कोई हक नहीं है, सिर्फ यूरोपियन वार्ड में ही नॉन ट्राइबल्स जमीन खरीद सकते हैं, यहां के ट्राइबल्स को सरकार द्वारा सारी सुविधाएं प्रदान की जाती है, व्यापार की बात की जाए तो यहां उद्योग भी हैं, पर गिने-चुने और उनमें से सीमेंट उद्योग सबसे ज्यादा हैं। एग्रीकल्चर में यहां के लोगों द्वारा मौसमी फल ऑरेंज, पाइनएप्पल, स्ट्रॉबेरी जैसे फल उगाए जाते हैं, जिसका निर्यात भी किया जाता है, यहां का सबसे पुराना और बड़ा मार्केट पुलिस बाजार है, जहां पर नॉन ट्राइबल्स व्यवसायियों की संख्या सबसे अधिक है। मारवाड़ी समाज की बात की जाए तो यहां ५०० से ६०० परिवार राजस्थानी है जिनके द्वारा यहां मंदिर, धर्मशाला, गौशाला, श्मशान भूमि जैसे कई सामाजिक कार्य किए गए हैं, वह भी १९७२ के पहले। पर्यटन की दृष्टिकोण से यह बहुत ही अच्छा स्थल है, यहां पर्यटन का बहुत बड़ा स्कोप है, लाखों पर्यटक साल भर में यहां आते हैं, यहां झरने, झील, चर्च, चेरापूंजी जैसे कई क्षेत्र हैं जो पर्यटन के लिए जाने जाते हैं। प्राकृतिक दृष्टिकोण से 'शिलांग' बहुत ही सुंदर है, यहां के ट्राईबल्स लोग भी पर्यटकों को भरपूर सहयोग करते हैं, क्योंकि उन्हीं से इनकी रोजी-रोटी चलती है, ऐसी अनेक कई विशेषताएं हैं हमारे 'शिलांग' में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम और पहचान 'भारत' नाम से ही रहना चाहिए।

सत्यनारायण जी मूलतः राजस्थान के सुजानगढ़ जिले में स्थित 'मीठड़ी' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'डिब्रूगढ़' में संपन्न हुयी है, यहां आप कंस्ट्रक्शन और होटल व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यक्रमों में भी शामिल रहते हैं, राजस्थानी विश्राम भवन के पिछले ८ सालों से उपाध्यक्ष पद व मारवाड़ी सम्मेलन शिलांग के सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

हिंदी को जन साधारण की भाषा बनाना है, विदेशी भाषा से हनन को बचाना है-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पारसमल बोथरा
व्यवसायी व समाजसेवी
राजलदेसर निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३६१०१८२५

पारसमल जी अपनी कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'शिलांग' में रात-दिन का अंतर आ गया है। सामाजिक माहौल की बात की जाए तो पहले यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही शांत और सौहार्दपूर्ण था, लोगों के बीच परस्पर मेल मिलाप बहुत ही उत्तम थे, पर धीरे-धीरे इसमें गिरावट आ रही है। यहां मारवाड़ी समाज के लगभग ६०० परिवार निवास करते हैं, सभी के बीच परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, यहां मारवाड़ी समाज द्वारा १९७० के पहले मारवाड़ी धर्मशाला, मंदिर बनाए गए हैं पर आज यहां नॉन ट्राईबल्स को जमीन खरीदने का हक नहीं है। सारी सामाजिक और राजनीतिक अधिकार यहां के ट्राईबल्स लोगों के पास ही है, व्यवसाय की बात की जाए तो यहां कृषि का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है, यहां फूल झाड़ू, काली मिर्च, पाइनएप्पल बहुत बड़े पैमाने पर होते हैं, जिसका निर्यात भी किया जाता है। उद्योग की बात की जाए तो यहां सीमेंट की कई फैक्ट्रियां हैं। अपने राजस्थानी समाज के लोग ट्रेडिंग के व्यवसाय से ही जुड़े हुए हैं। पर्यटन की बात की जाए तो यहां प्राकृतिक दृष्टिकोण से भरपूर है 'शिलांग', यहां कई वॉटरफॉल्स, झील व अन्य स्थान है, कुछ ऐतिहासिक स्थान भी हैं, जहां लोग जाना पसंद करते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'शिलांग' में...

पारसमल जी मूलत: राजस्थान स्थित 'राजलदेसर' के निवासी हैं। आपका जन्म राजस्थान में और संपूर्ण शिक्षा 'शिलांग' में संपन्न हुई है। यहां आप फूड ग्रेन डिस्ट्रीब्यूशन के कारोबार से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, पूर्व में 'शिलांग छावनी परिषद' के पार्षद एवं उपाध्यक्ष रहे हैं, मारवाड़ी सम्मेलन वह अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'।

प्रदीप पहाड़िया
व्यवसायी व युवा समाजसेवी
सुजानगढ़ निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ८७८७८८७२४३

प्रदीप जी अपनी कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'शिलांग' प्राकृतिक दृष्टिकोण से बहुत ही सुंदर है, 'चेरापूंजी' जो पूरे विश्व में पर्यटन व अधिक वर्षा के लिए जाना जाता है मुख्य है, इसके अलावा डॉवकी व अन्य कई वॉटरफॉल्स और लेक बने हुए हैं, जहां लोग घूमने जाना पसंद करते हैं, यहां हर धर्म समाज के लोग बसे हैं, यहां के मूल निवासी खांसी गारो और जयन्तीया जनजाति के हैं। यहां मारवाड़ी समाज के सैकड़ों परिवार बसे हैं जिनमें ४०-५० परिवार दिगम्बर जैन समाज के हैं। मारवाड़ियों के बीच परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, यहां दिगम्बर जैन समाज द्वारा जैन मंदिर बनाया गया है, जिसमें मूल नायक तीर्थंकर महावीर की प्रतिमा है, लोगों का एक दूसरे से बहुत ही अच्छा संबंध है, उद्योग व्यापार के लिए भी 'शिलांग' बहुत ही उचित जाना जाता है, यहां का प्रमुख मार्केट पुलिस बाजार है, इसके अलावा भी 'शिलांग' में अन्य कई विशेषताएं हैं जो इसे और खास बना देता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही। अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए, इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ।

प्रदीप जी मूलत: राजस्थान के चुरू जिले में स्थित 'सुजानगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'सुजानगढ़' में ही संपन्न हुई है, पिछले ५०-६० सालों से आप 'शिलांग' में बसे हैं और व्यवसाय से जुड़े हैं। साथ ही यथासंभव सामाजिक कार्यों से भी जुड़े रहते हैं। जय भारत!

पुरुषोत्तम चोखानी
अध्यक्ष मारवाड़ी पंचायत शिलांग
झुंझुनूं निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३६३०७१६७

पुरुषोत्तम जी अपनी कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मेरे बचपन का 'शिलांग' और आज के शिलांग में जमीन आसमान का अंतर आ गया है, पिछले ७० सालों में 'शिलांग' बहुत तेजी से विकसित हुआ है, लोगों के रहन-सहन के स्तर उच्च हो गए हैं। यहां ८५% ट्राईबल्स रहते हैं और जो भी बाहर से आकर बसे हैं उन्हें नान ट्राईबल्स कहा जाता है, यहां पहले लोगों के घर लकड़ियों के हुआ करते थे, आज ८०% मकान आरसीसी के बन गए हैं, जनसंख्या भी कई लाख बढ़ गई है। उद्योग व्यापार की बात की जाए तो पहले यहां टिंबर का कारोबार बहुत बड़े पैमाने पर होता था पर अब इस पर रोक लग गई है, यहां कोयले का कारोबार भी बड़े पैमाने पर होता है, सीमेंट की १०-१२ फैक्ट्रियां पूरे मेघालय में है, इसके अलावा यहां के फ्रूट्स और वेजिटेबल बहुत ही उत्तम गुणवत्ता वाले होते हैं, यहां अदरक, संतरा, पाइनएप्पल, आलू आदि बड़े पैमाने पर होते हैं, जिनका निर्यात भी किया जाता है, यहां ट्राईबल्स समाज के लोग ईसाई धर्म को मानने वाले हैं, इसके अलावा यहां मुस्लिम, जैन, हिंदू, बिहारी, सिख व अन्य समुदाय के लोग भी बसे हुए हैं, सभी के बीच परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, यहां एक समस्या जरूर है कि यहां नॉन ट्राईबल्स को जमीन खरीदने का हक ही नहीं है, **शेष पृष्ठ ३४ पर...**

पृष्ठ ३३ से... पर्यटन के बात की जाए तो यहां १२ महीने टूरिस्ट् का आना लगा रहता है, यह एक उत्तम पर्यटन स्थल के रूप में पूरे भारत में ही नहीं विश्व में विख्यात है, यहां का 'चेरापूंजी' डॉवकी जैसे कई पर्यटन स्थल हैं जो विश्व प्रसिद्ध हैं, ऐसी अनेक कई विशेषताएं हैं हमारे 'शिलांग' में... 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया तो अंग्रेजों की देन है, हमारी पहचान 'भारत' नाम से है और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

पुरुषोत्तम जी मूलतः राजस्थान के झुंझुनूं जिले में स्थित 'मुकुंदगढ़' के निवासी हैं, आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'मुकुंदगढ़' में और आगे की शिक्षा 'शिलांग' में संपन्न हुई है, यहां आप पिछले ७६ वर्षों से बसे हुए हैं और वर्तमान में कपड़ों के कारोबार से जुड़े हैं, जो आपके पुत्र और पोते संभाल रहे हैं, वर्तमान में मारवाड़ी पंचायत के अध्यक्ष पद पर सक्रिय है, चैंबर्स ऑफ कॉमर्स के भी अध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थानों में भी सक्रिय है। जय भारत!

संतोष कुमार चाचाण
व्यवसायी व समाजसेवी
चूरू निवासी शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८६२५८३६८०

संतोष जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'शिलांग' में जमीन आसमान का अंदर आ गया है, पहले 'शिलांग' बहुत ही छोटे क्षेत्रफल में था, यहां हमेशा सुनसान जैसा माहौल रहता था, पहाड़ी क्षेत्र अधिक थे, लोगों के लकड़ी के घर हुआ करते थे पर आज 'शिलांग' में चारों ओर आरसीसी के घर दिखाई देते हैं, सुविधा भी बहुत अधिक बढ़ गई है। लोगों के पास गाड़ियां अधिक हो गई हैं, जिससे ट्रैफिक की भी समस्या होने लगी है, इसके बावजूद 'शिलांग' का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही सुंदर है, साथ ही यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है, यहां राजस्थानी समाज के लगभग ५०० से अधिक परिवार बसे हुए हैं और यहां हर समाज की अपनी सामाजिक संस्थाएं बनी हुई हैं, लोगों का एक दूसरे के साथ आपसी प्रेम व्यवहार बहुत ही उत्तम है, यहां के मूल निवासी भी बहुत ही सहयोगी प्रवृत्ति के हैं। पर्यटन की बात की जाए तो शिलांग लेडी हयाद्री पार्क, शिलांग व्यू पॉइंट, वार्ड लेक, पोलो ग्राउंड जैसे कई पर्यटन स्थल हैं। चेरापूंजी भी यहां से मात्र ७० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, व्यवसाय की बात की जाए तो यहां का पाइनएप्पल, ऑरेंज, अदरक, झाड़ू बहुत ही प्रसिद्ध है, जो बाहर भी निर्यात किया जाता है। यहां के बर्निहाट में इंडस्ट्रीज है, यहां की आर्थिक स्थिति बहुत ही उत्तम है, यहां 'भारत' के लगभग हर राज्यों के लोग बसे हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'शिलांग' की...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

संतोष जी मूलतः राजस्थान के चुरू जिले में 'सावा' के निवासी हैं। आपका जन्म सम्पूर्ण शिक्षा 'शिलांग' में संपन्न हुई है, यहां आप विभिन्न कारोबार से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। शिलांग गौशाला, मारवाड़ी सम्मेलन, अग्रवाल सभा जैसी कई संस्थानों से जुड़े हैं। जय भारत!

नरेश जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
सुजानगढ़ निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३६१११४६१

नरेश जी अपनी कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पिछले ३० सालों में 'शिलांग' में बहुत कुछ बदलाव आ गया है, यहां की बसावट में पहले लोगों के घर कच्चे और लकड़ियों के हुआ करते थे, आज आरसीसी के घर दिखाई देते हैं। प्राकृतिक दृष्टिकोण से आज भी 'शिलांग' बहुत ही सुंदर है, मौसम में परिवर्तन आया है, पर आज भी यहां का मौसम बहुत ही सुहावना रहता है। यहां दिन प्रतिदिन पर्यटन को बढ़ावा मिल रहा है, यहां का चेरापूंजी, मौसमराम, मौसमी रोड, डॉवकी लेक व अन्य कई लेक व वॉटरफॉल्स जो यहां की सुंदरता को और बढ़ा देते हैं। यहां का सामाजिक वातावरण भी बहुत ही उत्तम है। मारवाड़ी समाज के लोगों के बीच अच्छा तालमेल है, यहां लगभग ४५ दिगम्बर जैन परिवार निवास करते हैं। यहां जैन समाज का मंदिर भी बना हुआ है और इनमें मूल नायक तीर्थंकर महावीर की प्रतिमा स्थापित है, उद्योग व्यापार की बात की जाए तो यहां कोयला, टिंबर का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है। ऑरेंज, अनानास, आलू की पैदावार यहां अच्छी होती है, जिसका निर्यात भी किया जाता है। यहां राजस्थानी समाज के अधिकतर लोग व्यवसाय से जुड़े हैं, जिनमें मुख्यत: फुड ग्रेन, टिंबर और कपड़े के कारोबार से जुड़े हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं, हमारे 'शिलांग' की...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल ही अपने देश का एक ही नाम है, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत', इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।

नरेश जी मूलत: राजस्थान स्थित 'सुजानगढ़' के निवासी है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'सुजानगढ़' में ही संपन्न हुयी है, वर्तमान में आपका परिवार 'जयपुर' का निवासी है। आप पिछले ३० सालों से 'शिलांग' में बसे हुए हैं, पेट्रोलियम और टिंबर के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

मुरारीलाल सोंथलीया

अध्यक्ष तमिलनाडू अग्रवाल समाज
इस्लामपुर निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४००२३८३५

मुरारीलाल जी होली पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'होली' भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा त्यौहार है, यह पर्व समाज में पूरे उत्साह से मनाता है। हमारे यहां 'श्री अग्रवाल समाज' कार्यरत है, इन संस्थाओं के माध्यम से 'होली' का पर्व बड़े ही धूमधाम से आयोजित किया जाता है, जिसमें सभी समाज बंधु उपस्थित होते हैं। 'होली' के पहले से ही विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से बच्चों में उत्साह जगाया जाता है और विजेताओं के साथ-साथ प्रतिभागियों को भी पुरस्कार प्रदान किया जाता है, शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिभावान छात्रों को स्कॉलरशिप दी जाती है। 'होली' के १ दिन पहले होलिका दहन कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, सभी समाज के लोग उपस्थित होते हैं, दूसरे दिन धूलंडी का कार्यक्रम अग्रवाल समाज द्वारा संचालित अग्रवाल विद्यालय में किया जाता है, जिसमें युवाओं की भागीदारी सबसे आगे रहती है। चेन्नई अग्रवाल समाज की संस्थाओं के माध्यम से विभिन्न धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, समाज के कई संस्थाएं कार्यरत हैं, संस्था द्वारा परिचय सम्मेलन भी आयोजित किया जाता है। संस्था द्वारा भागीदारी में 'कोला सरस्वती अग्रवाल हेल्थ सेंटर' भी चलाया जाता है, इसके अलावा संस्था दो स्कूल और एक कॉलेज चलाती है, इसके अलावा अग्रवाल समाज की अग्रवाल नव युवक संघ, अग्र ट्रेड, सहेली और फ्रेंड्स आदि संस्थाए कार्यरत हैं, इस तरह यहां का अग्रवाल समाज बहुत अधिक सक्रिय है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, जो हमें हमारी संस्कृति और इतिहास से जोड़ता है, इसलिए मैं इस अभियान का पूर्ण समर्थन करता हूँ।

मुरारीलाल जी मूलत: राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित 'इस्लामपुर' के निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'इस्लामपुर' में और उच्च शिक्षा 'कोलकाता' से ग्रहण की है। १९७४ से आप 'चेन्नई' में बसे हुए हैं, यहां आप स्टील मैन्युफैक्चर और ट्रेडिंग के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। तमिलनाडु अग्रवाल समाज के सदस्य, मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य हैं, श्री अग्रवाल समाज चेन्नई के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं। आरएसएस में भी सक्रिय रहते हैं, सनातन धर्म विद्यालय असोशिएशन द्वारा संचालित विद्यालय ट्रस्ट के आप कोषाध्यक्ष हैं। तमिलनाडू अग्रवाल समाज के अध्यक्ष व तमिलनाडू मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री पद पर भी कार्यरत हैं, अग्रवाल विद्यालय एवं जूनियर कॉलेज के सम्पर्क प्रमुख व सचिव भी हैं, अग्रवाल रिलीफ और एजुकेशन ट्रस्ट के प्रबंध ट्रस्टी हैं, इस ट्रस्ट के तहत दो विद्यालय और एक कॉलेज हैं। अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

अशोक नागोरी

पूर्व प्रांतीय उपाध्यक्ष मारवाड़ी सम्मेलन
डीडवाना निवासी-खारुपेटिया प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३५०८८११३

अशोक जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'होली' भारतीय संस्कृति का त्यौहार है, इस भारतीय त्योहार की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें भाग लेने के लिए आर्थिक मजबूती की आवश्यकता नहीं होती, यह एक ऐसा त्यौहार है जिसमें सनातन धर्म को मानने वाले चाहे वह किसी भी आर्थिक वर्ग से संबंधित हों, एक साथ होकर 'होली' का पर्व मनाते हैं। 'होली' के १५ दिन पहले से ही हमारे यहां 'होली' से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम होने लगते हैं, सामूहिक गोठ का कार्यक्रम भी किया जाता है, जिसमें बड़े-बड़े कलाकार आमंत्रित किये जाते हैं, 'होली' के १ दिन पहले 'होलिका' दहन समाज मिलकर करता है और दूसरे दिन धूलंडी के अवसर पर गुलाल-अबीर उड़ाकर होली का पर्व मनाया जाता है। हमारे यहां १८३ राजस्थानी परिवार निवास करते हैं और सभी परिवार इसमें सम्मिलित होते हैं।

आज की युवा पीढ़ी अपने धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों से दूर होती जा रही है, वह अपनी संस्कृति के त्योहारों से भी दूर हो रहे हैं। वह नौकरी के कल्चर में अधिक पड़ने लगी है, जिससे वह अपने परिवार से दूर हो जाते हैं और यह विघटन समाज में साफ दिखाई दे रहा है, युवाओं को अपने धर्म और समाज से जोड़े रखने के लिए सर्वप्रथम उन्हें समाज और परिवार में सम्मिलित करना बहुत जरूरी है, उन्हें समाज व धर्म के क्या फायदे हैं, क्या लाभ है? इससे अवगत कराना चाहिए, जिससे वह अपने धर्म और समाज से जुड़े रहें।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए। भरत चक्रवर्ती के नाम से इसे पहचाना जाता है, भारतीय संस्कृति का प्रतीक है 'भारत', इंडिया तो गुलामी की पहचान है, हमें इससे त्यागना चाहिए।

अशोक जी मूलत: राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'डीडवाना' के निवासी हैं। आपका जन्म स्थान सुजानगढ़ है, आपकी शिक्षा गुवाहाटी व तेजपुर में संपन्न हुई है, पिछले ६५ सालों से आप असम के 'खारुपेटिया' में बसे हुए हैं और तेल व दाल मिल के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। मारवाड़ी सम्मेलन खारुपेटिया के संस्थापक अध्यक्ष रहे हैं, वर्तमान में हनुमान मंदिर के कार्यकारिणी सदस्य हैं, श्री हनुमान मारवाड़ी धर्मशाला से भी जुड़े हैं। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व प्रांतीय उपाध्यक्ष रहे हैं। मारवाड़ी सम्मेलन के वर्तमान में खारुपेटिया मारवाड़ी सम्मेलन के सलाहकार की भूमिका निभा रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से जुड़े हैं। जय भारत!

बजरंगलाल अग्रवाल

अध्यक्ष मारवाड़ी सम्मेलन रामपुर शाखा
हरियाणा निवासी-उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३७६५७२११

बजरंगलाल जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि होली का पर्व खुशियों का पर्व है, अपनों से मेल मिलाप का पर्व है, इस पर्व के माध्यम से लोग अपने मन के क्लेश को दूर कर एक दूसरे से गले मिलते हैं, सौहार्दपूर्ण वातावरण निर्माण होता है। वातावरण में एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, इसीलिए यह पर्व हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है, हमारे रामपुर में अग्रवाल के ३५ परिवार हैं, सभी द्वारा मिलकर होली फाग उत्सव खेला जाता है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी हुई है, उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया अंग्रेजों की देन है, जिसका उल्लेख असभ्य और अशिक्षित लोगों के रूप में किया गया था, हमारी पहचान 'भारत' नाम से है 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

बजरंगलाल जी मूलत: हरियाणा स्थित 'चरखी दादरी' के निवासी हैं, आपका परिवार कई वर्षों से उड़ीसा के रामपुर में बसा हुआ है, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, यहां आप हार्डवेयर के कारोबार से जुड़े है, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, मारवाड़ी सम्मेलन रामपुर शाखा के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, स्थानीय समाज की विभिन्न संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

चंपक कुमार अग्रवाल

अध्यक्ष मारवाड़ी सम्मेलन जूनागढ़ शाखा
हरियाणा निवासी-उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३७०७०८८७

चंपक जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि होली का पर्व भाईचारे का पर्व है, लोग आपसी बैर को भुलाकर मेल-मिलाप करते हैं, यह बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है, समाज और वातावरण में एक नए उत्साह का निर्माण होता है, इसीलिए 'होली' का पर्व बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमारे यहां समाज द्वारा अग्रसेन भवन में 'होली' का पर्व फाग उत्सव आयोजित किया जाता है, उसके एक दिन पहले समाज की महिलाएं होलिका दहन कार्यक्रम का आयोजन करती हैं, पूजा अर्चना की जाती है और दूसरे दिन समाज के सभी आयु वर्ग के लोग धुलंडी का आनंद लेते हैं।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से थोड़ा कट रही है और कहीं ना कहीं यह परिवार से भी दूर भी होती जा रही है, आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता को महत्व देने लगी है, जिससे उनका अपने धर्म और समाज के प्रति रुझान कम होता दिखाई दे रहा है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहना चाहिए 'भारत'।

चंपक जी मूलत: हरियाणा स्थित सांगा के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा उड़ीसा के 'जूनागढ़' में संपन्न हुई है, यहां आप सीमेंट व कपड़ों के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, मारवाड़ी सम्मेलन जूनागढ़ शाखा के अध्यक्ष हैं, मर्चेंट एसोसिएशन के भी कई वर्षों तक अध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं।

संगीता शर्मा

श्री श्याम बाबा आराधिका, समाजसेविका
मंडावा निवासी-शिलांग प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८६३११३२३२

संगीता जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'शिलांग' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहती हैं कि 'शिलांग' में बहुत कुछ परिवर्तन आया है, विशेष परिवर्तन पर्यावरण में हुआ है। पहले यहां हमेशा बारिश होती रहती थी, पर अब इसमें कमी आ गई है, मौसम में बहुत बदलाव आया है। पहले हमारे लिए पीने का पानी मीठे झरना से सीधे आता था, पर आधुनिकता के नाम पर बड़ी-बड़ी टंकियां बना दी गई हैं, जिससे वाटर सप्लाई के माध्यम से पानी आता है, पर उसमें भी कटौती होने लगी है, पहले यहां कभी बिजली नहीं जाती थी, पर अब कभी भी कई घंटे तक बिजली गायब रहती है। शिक्षा के दृष्टिकोण से बात की जाए तो एक समय 'शिलांग' बहुत ही उत्तम स्थान था, इसीलिए आसपास के क्षेत्र के भी बच्चे यहां शिक्षा के लिए आते थे, पर अब इसमें भी कुछ गिरावट आ गई है, बुनियादी सुविधाएं हैं पर व्यवस्थित नहीं हैं, यहां के सामाजिक वातावरण की बात की जाए तो लोगों में पहले सौहार्द और आत्मीय संबंध थे, पर अब इसमें कमी आ गई है, कुछ अपवाद भी है, क्योंकि यह क्षेत्र क्रिश्चियन बाहुल्य बनता जा रहा है, जो यहां के मूल निवासी हैं, अन्य धर्म और समाज के लोगों की संख्या बहुत कम है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से बात की जाए तो 'शिलांग' आज भी बहुत ही सुंदर शहर है, मुख्य शहर तो कंक्रीट का जंगल बन चुका है, पर शहर से बाहर निकलते ही सुंदर नदी, झरने, तालाब, झील व प्राकृतिक नजारों से भरा है 'शिलांग', इसीलिए हमें बहुत भाता है। शिलांग के मसाले, बंबू, ऑरेंज, पाइनएप्पल बहुत ही उत्तम होते हैं, जिसका निर्यात भी किया जाता है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'शिलांग' में... **शेष पृष्ठ ३७ पर...**

देश की शान, हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पृष्ठ ३६ से ... 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि राजा भरत से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा, यह हमारी संस्कृति को हमसे जोड़े रखता है। आने वाली पीढियों को अपने धर्म, समाज और संस्कृति से जोड़े रखने के लिए हमारी प्राचीन पहचान ही मुख्य भूमिका होगी, इसीलिए अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

संगीता जी मूलत: राजस्थान के 'मंडावा' के निवासी हैं, आपका पिहर चूरू है। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा शिलांग में ही संपन्न हुई है। यहां आप समाज सेवा में सक्रिय रहती हैं। आपको भजन, कविता, गजल, नज्म लेखन का शौक है, आप ज्वलंत सामाजिक मुद्दों पर भी लिखती रहती हैं। आपके लेख कई पेपर और मैगजीन में भी प्रकाशित होते रहते हैं, आपको कई साहित्यिक पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं, पूर्वोत्तर साहित्य अकादमी से भी जुड़ी हुई है, नारायण सेवा संस्थान द्वारा आपको सम्मान प्राप्त है, भारतेंदु की भी उपाधि प्राप्त है। श्री श्याम सत्संग सेवा समिति से पिछले २३-२४ सालों से जुड़ी है, आपको परम आराधिका के रूप में ख्याति प्राप्त है। मारवाड़ी सम्मेलन में सक्रिय सदस्य हैं, मारवाड़ी महिला समिति से जुड़ी हुई हैं, ब्राह्मण महासभा से जुड़ी हैं, विश्व हिंदू परिषद शिलांग व खांडेल महासभा की उपाध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़ी हैं। जय भारत!

दीप्ति दिनेश सिंघल

अध्यक्ष मारवाड़ी महिला सम्मेलन बारबिल शाखा
रोहतक निवासी-उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३७१२२४३१

दीप्ति जी, 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहती हैं कि होली बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है एवं सभी अपने मतभेदों को भुलाकर आपस में गले मिलते हैं। उड़ीसा के बड़बिल में करीब १५० से २०० मारवाड़ी परिवार रहते हैं। समाज द्वारा होली मिलन का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है जिसमें सभी लोग सम्मिलित होते हैं। पहले दिन होलिका दहन जिसमें महिलाएं इकट्ठा होकर पूजा करती हैं, परिक्रमा लगती हैं एवं होली जलाई जाती है। दूसरे दिन सुबह अच्छा छारंडी रंग उत्सव खेला जाता है और संध्या के समय होली मिलन होता है जिसमें विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, जिसका सभी आयु वर्ग के लोग सम्मिलित होकर उसका आनंद उठाते हैं।

यहां पर मारवाड़ी समाज का हरिओम भवन एवं मारवाड़ी समाज वाटिका नाम से एक उद्यान है ।

प्रत्येक वर्ष धार्मिक अनुष्ठान, होली मिलन, दिवाली मिलन, बहुत ही भव्य रूप में महिलाओं का तीज मिलन और एक मेले का आयोजन किया जाता है। आज की युवा पीढ़ी को भी अपने धर्म और समाज से जोड़ने की अत्यंत आवश्यकता है क्योंकि धीरे-धीरे युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर होती जा रही है। अतः समाज द्वारा आयोजित सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों में उनका थोड़ा भी योगदान होने से वह धर्म और समाज से जुड़े रहेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि १००% अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ भारत ही रहना चाहिए इंडिया तो बिल्कुल भी नहीं। आपके पति श्री दिनेश सिंघल जी, हरियाणा स्थित रोहतक निवासी हैं।आपका जन्म एवं सम्पूर्ण शिक्षा उत्तर प्रदेश के मोदीनगर में संपन्न हुई। अब पिछले २१ सालों से आप उच्च माध्यमिक विद्यालय में शिक्षिका के पद पर कार्यरत हैं , साथ ही आप समाज सेवा में भी सक्रिय रहती हैं। उड़ीसा के बड़बिल में स्थित मारवाड़ी महिला सम्मेलन के अध्यक्ष पर सक्रिय हैं और यथासंभव अन्य सामाजिक कार्यक्रमों से भी जुड़ी रहती हैं।

अशोक सेठ

चेयरमैन आरडब्ल्यूए पॉकेट-१, सेक्टर २४, रोहिणी
कानपुर उ.प्र. निवासी-रोहिणी दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९९९१९४६४४

अशोक जी 'होली' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'होली' सौहार्दपूर्ण उत्सव है, प्रेम का त्यौहार है, बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है, 'होली' हमारे भीतर की बुराइयों को समाप्त कर रंगों के उजाले में हमारा जीवन खिल उठे, इसीलिए 'होली' का महत्व आज भी बना हुआ है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी है वे विभिन्न धार्मिक सामाजिक कार्यों से जुड़े रहते हैं, उनका योगदान बढ़-चढ़कर रहता है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आप कहते हैं कि 'भारत' नाम में अपनापन है, यह हमारी पुरानी पहचान है। देश का नाम शकुंतला के पुत्र 'भरत' के नाम पर हमारे देश का नाम 'भारत' पड़ा था, अंग्रेजो ने अपनी सुविधा के अनुसार इसको इंडिया बना दिया। लेकिन भारत को केवल 'भारत' ही बोलना चाहिए।

अशोक जी दिल्ली स्थित 'रोहिणी' निवासी हैं। आपने शिक्षा कानपुर विश्वविद्यालय से प्राप्त की। आप आरडब्ल्यूए पॉकेट १ सेक्टर २४ रोहिणी में चेयरमैन के पद पर कार्यरत हैं। अशोक जी कर्मठ समाज सेवी मृदु स्वभावी व्यक्ति हैं जो हमेशा अपने सेक्टर २४ रोहिणी में हर सामाजिक कार्य में सदैव तत्पर रहते हैं। पॉकेट १ सेक्टर २४ रोहिणी आरडब्ल्यूए में सभी को साथ लेकर हमेशा कुछ बेहतर करने की प्रेरणा देते हैं। व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक उत्थान में हमेशा योगदान देते हैं। २००६ से 'रोहिणी' सेक्टर २४ में निवास कर रहे हैं। 'रोहिणी' के बारे में बताते हैं कि पहले 'रोहिणी' में बहुत कम आबादी थी, काफी शांत एरिया था, अब घनी आबादी होने के कारण यहां पर लोगों का ज्यादा शोरगुल बढ़ गया है, फिर भी बाकी सेक्टरों की तुलना में यहां बेहतर रहने की जगह है, काफी विकास हुआ है। सरकार द्वारा कई व्यवस्था की गई हैं, कुछ सड़कें खराब हो गई हैं लेकिन बहुत अच्छी भी हैं। जय भारत!

यदि बढ़ाना है देश को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

आचार्य श्री को छत्तीसी विधान में अर्पित की गई संगीतमय विनयांजलि

आचार्य विद्यासागर महाराज की स्मृति में कार्यक्रम

दिगम्बर जैन समाज के समाधिस्थ आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज को विनयांजलि समर्पित करने के लिए सामाजिक संस्था, तुभ्यं नमो के संयोजन में संगीतमय आचार्य श्री छत्तीसी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बोरीवली पूर्व के संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान (नेशनल पार्क) में स्थित पोदनपुर तीन मूर्ति दिगंबर जैन मंदिर में महिलाओं द्वारा संगीतमय आचार्य छत्तीसी विधान का आयोजन हुआ। इसमें दक्षिण मुंबई, भायंदर, मीरा रोड, ठाणे, बोरीवली, अंधेरी, विले पार्ले, अंधेरी पश्चिम के लोखंडवाला, गोरेगांव, मालाड, दादर, वर्ली, ऐरोली, वाशी, नेरुल, नवी मुंबई आदि की महिलाएं शामिल हुईं। बड़ी संख्या में उपस्थित दिगम्बर समाज की महिलाओं ने गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित किए। आयोजन में आर्यिका श्री जिनदेवी माताजी, आर्यमती माताजी व क्षुल्लिका श्री मंगलमति माता जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। इस अवसर माताजी ने उपस्थित महिला समूह को संबोधित किया और कहा कि आचार्यश्री की प्रेरणा से संचालित प्रकल्पों और उनके संदेशों को हमें जन-जन तक पहुंचाना है। गुरुदेव के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन नीता दिलीप घेवारे, पद्मा पंकज जैन, आरती पुष्पराज जैन, प्रतिभा जैन ने किया। संस्था की इंदु प्रभात जैन, वंदना सालगिया, डॉ. सुजाता जैन आदित्य, विधि प्रवीण जैन ने संस्था के कार्यों की जानकारी दी। संस्था गत ५ वर्षों से मुंबई, ठाणे व नवी मुंबई में कार्यरत है। भारत, स्वदेशी गुरुकुल आधारित शिक्षा प्रणाली, भारतीय संस्कृति व भारतीय भाषाओं के संरक्षण व संवर्द्धन का कार्य कर रही है। यह सभी विषय आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के जीवन-दर्शन से प्रेरित हैं। कार्यक्रम में आचार्य श्री द्वारा रचित ग्रंथों को भी प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम का संचालन विधि प्रवीण जैन ने किया।

Champak Kumar Agarwal
Mob: 9437070887 / 9583600250

ROOPAN TRADERS

Rajni Agrawal
Proprietor
Delas In All Types Of Cement

Marwadi Pada, Near Radha Krishna Mandir
Junagarh, Kalahandi, Odisha, Bharat - 766014
Email: roopantraders12@gmail.com

खुद ऐसे घर पर बनाएं आयुर्वेदिक हेल्दी कलर!!

हमारे जीवन में रंगों का अपना महत्व है, रंगीन मौसम, रंगीन मिजाज, सतरंगी छटा और न जाने कितनी ही उपमाओं से हमने अपने जीवन को रंगीन बनाया है। शायद होली के रंग भी कुछ ऐसा ही सन्देश देते हैं, होली पर रंगों का प्रयोग अक्सर होता है पर यदि इसमें कुछ संसोधन कर दिए जाएँ तो बात ही कुछ और हो जाये, हम आपको कुछ ऐसे ही देशी टिप्स बताते हैं, जो रंगों को और अधिक रंगीन तो बनायेंगे ही, साथ ही अच्छे स्वास्थ्य को भी बरकरार रखेंगे....

मेहंदी के पाउडर को आटे के साथ मिला दें अब इसका रंग हरा हो जाएगा और जब आप इसे पानी में मिलायेंगे तो यह थोड़ा संतरे सा रंग ले लेगा और यदि इसमें सूखे गुलमोहर के पत्ते पीस कर मिला दीजिये तो यह हरा रंग छोड़ेगा।

दो चम्मच हल्दी का पाउडर लें और इसमें दुगनी मात्रा में बेसन मिला दें, अब इसमें अमलतास या गेंदे के फूल को पीसकर मिला दें....इससे आपको पीला रंग मिलेगा।

लाल चन्दन में थोड़ा गुड़हल के फूलों को सुखाकर पीसकर मिला दें, हो गया लाल रंग तैयार। बेर के फूल को सुखाकर पीसकर पानी या आटा मिला दें, इससे आपको नीला रंग मिलेगा।

टेशू या पलाश के फूलों को सुखाकर पीसकर पानी में रात भर छोड़ दें या इसे पानी में उबाल दें इससे आपको केसरिया रंग मिलेगा।

चुकंदर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर पानी में डूबा दें इसे यदि उबालेंगे तो आपको मेग्नेटा कलर मिल जाएगा।

कत्थे के चूर्ण को पानी में मिलाकर आप भूरा रंग तैयार कर सकते हैं।

आंवले को सुखाकर पानी में भिंगोकर रातभर किसी बर्तन में छोड़ दें और अब इसे पानी में मिलाकर आप काला रंग तैयार कर सकते हैं, तो आप इन रंगों से वर्ष २०२४ की होली को मनाएं और भी अधिक रंगीन, जो रंग रखेंगे, आपके स्वास्थ्य का रखेगा बेहतर ख्याल....

सम्पादक-विजय कुमार जैन

जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

हम सब जैन हैं

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
पत्रिका मुफ्त

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

वार्षिक शुल्क
२१००/-

मात्र रु. १५०/- में, प्रति महिना

पंजीकृत कार्यालय

गेलॉर्ड पब्लिकेशन्स प्रा.लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनिः ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाकः mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

अहिंसा

परस्परोपग्रहो जीवानाम

Postal Registration Number - MCN/294/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-354/North/2024-26
Published on 19th March 2024 & Posting on 20th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

भारत को 'भारत' ही बोलें इंडिया नहीं

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

१४ वें वर्ष में प्रवेश

मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को पोषित करती पत्रिका

अभी तक भारत के शहरों के इतिहास बताते हुए प्रकाशित विशेषांक...

विशेष छूट

विज्ञापन प्रकाशन करने पर
पूरे साल
मैं भारत हूँ
पत्रिका मुफ्त

भारत का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

आप चाहें तो प्रस्तुत विशेषांक
आपके घर-कार्यालय की
शोभा व ज्ञान (आसाम) बढ़ाने के लिए मंगवा सकते हैं

आपके हाथों में

विशेषांक मंगवाने के लिए संपर्क करें
(समय १ दोपहर से संध्या ५.०० बजे तक)

ज्योति
9820873689

मात्र ₹ १२००/-में
प्रति महिना, पूरे वर्ष तक
(आपके द्वार)

पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९.
दूरभाष- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना: www.mainbharathun.co.in

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
Remove India Name From the Constitution

नीम लगायें पर्यावरण बचाये
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059 से मुद्रित करवा कर बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-०२२-२८५० ९९९९, अणुडाक-mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना - www.mainbharathun.co.in,
द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI No. MAHHIN/2010/48574